ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 26 | अक्टूबर-I-2024 | अंक - 13 | माउण्ट आबू | Rs.-12

मुख्यमंत्री ने ब्रह्माकुमारीज़ के साथ मिलकर कार्य करने की जताई मंसा

हैदराबाद में 'शांति सरोवर' होना हमारे लिए सौभाग्य की बात : मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी

हैदराबाद-तेलंगाना। ब्रह्माकुमारीज़ के शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर द्वारा ईश्वरीय सेवाओं के 20वें वार्षिकोत्सव समारोह में माननीय मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी ने कहा कि हैदराबाद में शांति सरोवर होना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा शुरू की गई 4 सामुदायिक सेवा परियोजनाएं हमारे चुनाव घोषणापत्र से मेल खाती हैं। सरकार नशे के उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध है और हम इस संस्थान के साथ हाथ मिलाने के लिए तैयार हैं। ब्रह्माकुमारी बहनें किसानों की आत्महत्या को रोकने के लिए नशा मुक्ति पर काम कर रही हैं। हम ब्रह्माकुमारीज़ को इसमें हर संभव सहयोग और समर्थन देंगे। कृषि राज्यमंत्री तुम्मला नागेश्वर राव ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ संस्था समाज की विभिन्न बुराइयों को दूर करने तथा लोगों को अच्छा जीवन जीने के लिए प्रेरित करने का प्रयास कर रही है। दुदिल्ला श्रीधर बाबू,आईटीई एवं सी,उद्योग एवं वाणिज्य राज्यमंत्री ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ एक ईश्वर और एक विश्व परिवार का संदेश देती है। राजयोगिनी ब्र.कु. कुलदीप दीदी, निदेशिका,शांति सरोवर ने मुख्यमंत्री, अन्य गणमान्य व्यक्तियों और समारोह में आए सभी लोगों का हृदय से स्वागत किया। डॉ. कार्तिकेयन,आईपीएस,पूर्व सीबीआई निदेशक ने कहा कि महिला सशक्तिकरण की भूमिका ब्रह्माकुमारीज़ के विकास में परिलक्षित होती है, जिसका संचालन महिलाओं द्वारा किया जाता है। राजयोगिनी ब्र.कु. संतोष दीदी,संयुक्त मुख्य प्रशासिका,ब्रह्माकुमारीज़ ने कहा कि कर्म की गतिशीलता को समझने के लिए ज्ञान बहुत ज़रूरी है, ताकि हम अपने कार्यों को बेहतर बना सकें। सही कर्म सही परिणाम देंगे। ज्ञान का प्रकाश हमें परमात्मा से जुड़ने की शक्ति देता है, जिससे सकारात्मक विचार और बेहतर व्यक्तित्व का निर्माण होता है। राजयोगी ब्र.कु. मृत्युंजय भाई,कार्यकारी सचिव,ब्रह्माकुमारीज़,माउंट आबू ने कहा कि हम सकारात्मक परिवर्तन के लिए किसानों, युवाओं में नशामुक्ति, प्राकृतिक खेती, आत्महत्या रोकथाम तथा विकलांगों को सशक्त बनाने(आई कैन) पर सामुदायिक सेवा परियोजनाएं शुरु कर रहे हैं। जिससे समाज में अवश्य जागृति आयेगी। राजयोगी ब्र.कु. डॉ. बनारसी लाल शाह, सचिव,मेडिकल विंग,ब्रह्माकुमारीज़ माउंट आबू ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ मेडिकल विंग की सेवाओं के तहत हम एक व्यसन मुक्त समाज बनाने के लिए प्रतिबद्ध हैं। मंथेना सत्यनारायण,प्रख्यात प्राकृतिक चिकित्सक ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में मैंने सीखा कि हमें हमेशा देने वाला होना चाहिए, लेने वाला नहीं। अगर हम ईश्वर द्वारा दिए गए ज्ञान को समझ लें, तो आंतरिक परिवर्तन आसानी से संभव है। न्यायमूर्ति वी. ईश्वरैया(सेवानिवृत्त) ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में दी जाने वाली आध्यात्मिकता की दैनिक खुराक ही हमें भ्रष्टाचार और अपराध के प्रभाव से बचा सकती है। तेलंगाना सरकार के सचेतक रामचंद्र भनोथ, विधायक प्रकाश गौड़, सांसद रघुवीर रेड्डी, सेरिलिंगमपल्ली के विधायक अरेकापुडी गांधी एवं व्यवसायी वाईएस चौधरी ने भी समारोह में भाग लिया। इस मौके पर संस्थान की पूर्व मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि का 17वां पुण्य स्मृति दिवस भी मनाया गया।

शांति सरोवर रिट्रीट सेंटर के 20वें वार्षिकोत्सव समारोह में मुख्यमंत्री ने निम्न 4 सामुदायिक सेवा परियोजनाओं का किया शुभारंभ

- नशा मुक्ति अभियान
- प्राकृतिक कृषि पद्धतियाँ और आत्महत्या की रोकथाम
- सकारात्मक बदलाव के लिए युवा
- मैं यह कर सकता हूँ - दिव्यांग सेवा

आपकी ईमानदारी से समाज को मिलेगी शक्ति

- सामाजिक न्याय तथा सशक्तिकरण मंत्री

ब्रह्माकुमारीज़ के मेडिकल प्रभाग द्वारा 50वें अखिल भारतीय सम्मेलन का ज्ञानसरोवर में सफल आयोजन

ज्ञानसरोवर-मा.आबू। ब्रह्माकुमारीज़ के ज्ञानसरोवर परिसर में 'माइंड बॉडी मेडिसिन' विषय पर मेडिकल प्रभाग द्वारा आयोजित 'अखिल भारतीय सम्मेलन' में देश भर से 400 डॉक्टर्स ने हिस्सा लिया। इस मौके पर भारत सरकार के सामाजिक न्याय तथा सशक्तिकरण मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार ने कहा कि इस संस्था के द्वारा ईश्वरीय मूल्यों का जो प्रत्यारोपण किया जा रहा है वह बहुत ही सराहनीय है। उन्होंने सभी चिकित्सकों का आह्वान करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ के राजयोग मेडिटेशन के अभ्यास द्वारा अपने मन में पवित्रता, शांति, प्रेम, दया, करुणा आदि का भाव विकसित करके समाज के हर वर्ग के लोगों को लाभ दें। ज्ञानसरोवर की डायरेक्टर राजयोगिनी ब्र.कु. प्रभा दीदी ने कहा कि राजयोग मेडिटेशन के निरंतर अभ्यास द्वारा आप शरीर के साथ-साथ मन के रोगों को भी ठीक कर पाएंगे। मेडिकल प्रभाग के चेयरपर्सन डॉ. अशोक मेहता ने प्रभाग द्वारा की जा रही सेवाओं की जानकारी देते हुए बताया कि संस्था का मेडिकल प्रभाग आध्यात्मिकता के आधार पर मानवता की सेवा कर उनको देवत्व की ओर ले जा रहा है। सम्मेलन को संस्था के कार्यकारी सचिव ब्र.कु. मृत्युंजय, नई दिल्ली जी.बी. पंत हॉस्पिटल के कार्डियोलॉजी प्रोफेसर डॉ. मोहित गुप्ता, मेडिकल प्रभाग के वाइस प्रेसिडेंट डॉ. प्रताप मिड्ढा, एआईआईएमएस जोधपुर के डायरेक्टर जी.डी. पुरी, चिकित्सा विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. भाग्यश्री पाटिल तथा मेडिकल प्रभाग के सेक्रेट्री जनरल डॉ. बनारसी लाल शाह ने भी सम्बोधित किया। संचालन ब्र.कु. मोनिका गुप्ता,नई दिल्ली ने किया।

दृढ़ता की शक्ति से मन को सशक्त बनाना होगा

अंतर्राष्ट्रीय प्रेरक वक्ता ब्र.कु. शिवानी बहन ने डॉक्टर्स को सम्बोधित करते हुए कहा कि शांति, पवित्रता और आनंद की अनुभूति करने के लिए दृढ़ता की शक्ति का प्रयोग कर अपने मन को सशक्त बनाना होगा। मेडिटेशन माइंड की शक्तिशाली मेडिसिन है। अधिकतर व्याधियों की उत्पत्ति मानव अपने कमज़ोर मन से करता है। सकारात्मक दृष्टिकोण से मन में अलौकिक ऊर्जा की रचना बढ़ती है।

सही मायने में ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा ही हो रहा विश्व में शांति स्थापना का कार्य : महामंडलेश्वर अनिलानंद महाराज

भोपाल-नीलबड(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के सुख शांति भवन मेडिटेशन रिट्रीट सेंटर में दादी प्रकाशमणि के 17वें पुण्य स्मृति दिवस के अवसर पर आयोजित 'विश्व बंधुत्व' कार्यक्रम में महामंडलेश्वर श्री अनिलानंद जी महाराज ने दादी प्रकाशमणि एवं ब्रह्माकुमारीज़ की सराहना करते हुए कहा कि यहां रहने वाली बहनों और भाइयों द्वारा मनुष्य और प्रकृति की सेवा की जा रही है। तपस्या के लिए घर-बार छोड़कर जंगल में जाना दूसरी बात है परंतु मनुष्यों के बीच रहते मनुष्य मात्र की सेवा करना सबसे बड़ी तपस्या का प्रताप है। उन्होंने कहा कि अगर विश्व में शांति स्थापन करने का कार्य सही मायने में कहीं हो रहा है तो वह ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा ही हो रहा है। आचार्य डॉ. श्री नीलिंप त्रिपाठी जी ने बताया कि बिना ज्ञान के मुक्ति संभव नहीं है और ज्ञान से ही पवित्रता, सरलता, निश्छलता आती है और इससे ही जीवन में रस आता है। ब्र.कु. पूनम दीदी ने बताया कि दादी प्रकाशमणि जी ने न केवल भारतवर्ष में अपितु पूरे विश्व की हर आत्मा को एक धागे में पिरोने का भागीरथी प्रयास किया। इसीलिए उनकी अव्यक्ति तिथि को विश्व बंधुत्व दिवस के रूप में मनाया जाता है। गायत्री शक्तिपीठ के जिला अध्यक्ष अशोक सक्सेना, ज्योतिष मठ संस्थान के संचालक विनोद गौतम, बौद्ध धर्म से भिक्षुणी संघमित्रा जी एवं भोपाल दक्षिण पश्चिम क्षेत्र के विधायक भगवान दास सबनानी ने भी अपनी भावनायें प्रकट की। ब्र.कु. साक्षी दीदी ने सभी को राजयोग मेडिटेशन का अभ्यास कराया। ब्र.कु. राम भाई ने दादी प्रकाशमणि जी के जीवन से जुड़ी कुछ स्मृतियां अनुभव सहित सभी के समक्ष रखी। स्थानीय सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. नीता दीदी ने सभी का धन्यवाद करते हुए कहा कि अगर हम यह समझ जाएं कि हम एक ही परमात्मा पिता की संतान आपस में भाई-भाई हैं तो सच्चा सुख, शांति, प्यार और सहयोग की भावना स्थापित हो सकती है।

कार्यक्रम में 'विश्व बंधुत्व' पर अनेक संत-महात्माओं ने व्यक्त किये अपने उद्गार

'ममत्व' महान नहीं बनने देता

कर्म भी करें और उसमें ममत्व भी न रहे, ऐसा कर्म हो सकता है? हम कई बार कहते हैं, नेकी कर दरिया में डाल। दूसरी ओर हम ये भी कहते हैं जैसा कर्म होगा वैसा फल अवश्य मिलता है। तो भला कर्म करने पर उसके बदले कुछ आश न रहे, ये कैसे हो सकता है! कर्म और उसका प्रतिफल उसकी छाया की तरह है। वो मिलता ज़रूर है। बिना कर्म कोई रह भी नहीं सकता। तब भला हम उसके फल से वंचित कैसे रह सकेंगे! अब उसका सही ज्ञान या समझ क्या है ये जानने की कोशिश करते हैं।

आजकल व्यक्ति कोई क्रांतिकारी कर्म करता है तो उसकी महिमा होती है। मान-सम्मान समाज में होता है। किंतु वे गायन योग्य तो बन जाते हैं लेकिन पूजनीय नहीं बन पाते। पूजनीय बनने का आधार श्रेष्ठ, असाधारण,अनुकरणीय और आदर्श कर्म है। हम सभी कर्म करते हैं लेकिन उसके पीछे कहीं न कहीं ममत्व बना रहता है। वो बहुत ही सूक्ष्म है जो हमें महान बनने से दूर करता है। जैसे हम कुछ करते हैं तो उसके बदले हमारा नाम हो, मान हो, प्रतिष्ठा हो, शान हो, यह अहम सूक्ष्म रूप में छिपा रहता है। मैं-पन के ये भाव महान बनने से वंचित करते हैं। लोगों की नज़रों में तो हम महान या गायन योग्य बन जाते हैं किंतु पूजनीय नहीं बन पाते क्योंकि हम कर्म के पीछे उसके बदले कुछ न कुछ पाने की इच्छा का भाव बना रहता है। इच्छा भाव उस लक्ष्य तक पहुंचने में असमर्थ बनाता है।

परमात्मा ने हमें बहुत ही सुंदर तरीके से बताया है कि कर्म करते कैसे ममत्व से मुक्त रहें, कैसे उसे व्यवहारिक रूप देते हुए परम, श्रेष्ठ बनें, इसके लिए वे कहते हैं कि कोई भी कर्म साधारण या असाधारण बनाना आपके हाथ में है। उसका ज्ञान वे हमें देते हैं। कर्म तो करेंगे ही लेकिन कर्म में कुछ पाने की आश का भाव जिसको हम ममत्व भाव कहते हैं, उससे कैसे बचा जाये? इसमें हमें ध्यान रखना है कि हमारा कोई भी कर्म हमारे मनोभाव की पवित्रता को दूषित न करे। आप इतना छोटा-सा ध्यान रखेंगे, अटेंशन रखेंगे तो आप स्वयं ही श्रेष्ठ भाग्य के निर्माता वही कर्म करते हुए बन जायेंगे। इसलिए परमात्मा ने कभी ये नहीं कहा कि तुम कर्म-सन्यासी बनो। लेकिन कर्म करते हुए ममत्व भाव न रखें, ये बताया है। आजकल लोग धन-उपार्जन के लिए सुबह से रात तक लगे रहते हैं। जिसके फलस्वरूप वे धन तो कमाते हैं लेकिन अपने परिवार, बच्चों की परवरिश, उस सुख से वे वंचित हो जाते हैं। कमाने का भूत इतना सवार हो जाता है जैसे बंदर की मुट्ठी से चना नहीं छूटता, उसी तरह दिन-रात कमाने के चक्रव्यूह में व्यक्ति फंसा रहता है। हम पूजनीय की दौड़ में आगे बढ़ना चाहते हैं, तो हमें वो प्रैक्टिस हमारे जीवन में अविरत, निरंतर करते रहना चाहिए जिससे अपना कर्म अलौकिक बनता रहे। उस बारीकी व सूक्ष्मता को अपने ज़हन में हमेशा ज्वलंत बनाये रखना चाहिए, ये ध्यान रखना है। उसके फलस्वरूप हम महान के साथ पूजनीय बनेंगे, दूसरों के आदर्श और प्रेरक भी बनेंगे।

शुभ भावना सम्पन्न संकल्प करो, स्वमान में रहो और सबको सम्मान दो

हम सबका लक्ष्य है कि सम्पूर्ण बाप समान बनना ही है। तो यह चेकिंग ज़रूरी है कि मन-बुद्धि-संस्कार सब कन्ट्रोल में हों।

हम सभी बाबा के लवलीन बच्चे, सदा बाबा के लव में, प्यार में खोये हुए हैं। यह परमात्म प्यार कोटों में कोई को प्राप्त होता है क्योंकि हम डायरेक्ट बाबा की पहली रचना हैं। बाबा हम बच्चों को कहते हैं तुम मेरे बच्चे बेफिक्र बादशाह हो क्योंकि हमारी ज़िम्मेवारी लेने वाला भगवान है। अगर हमने मन से अपने जीवन की ज़िम्मेवारी बाबा को दे दी, तो भगवान से बड़ा और कोई है क्या! लेकिन यह ज़रूर देखना है कि सचमुच हमने अपने जीवन की ज़िम्मेवारी बाबा को दी है! या कभी बाबा को दी है, कभी थोड़ी जो भी सांसारिक बातें होती हैं, उनमें भी बुद्धि जाती है। हमारे सामने माया ही पेपर लेने वाली है। जब बाबा को ज़िम्मेवारी दे दी, तो उसके आगे माया कुछ नहीं कर सकती। तो बाबा को ज़िम्मेवारी दी है या कभी-कभी मैंपन आ जाता है? मैं और मेरापन, यह दो बातें ही इस ईश्वरीय जीवन में, सम्पन्न बनने में विघ्न रूप बनती हैं। हद का मैंपन या मेरापन, यह बाबा से दूर कर देता है। जब आप कहते हो बाबा मेरे से कम्बाइंड है, तो कम्बाइंड अलग हो ही नहीं सकता। जिसके साथ सर्वशक्तिवान कम्बाइंड हो उसके आगे माया की हिम्मत ही कैसे होगी!

शुरू में बाबा कहता था बच्ची, इतना मास्टर सर्वशक्तिवान बनो जो माया दूर से ही भाग जाये। दूर से माया को भगाने के लिए कम्बाइंड की स्मृति में रहें। कई कहते हैं हम कम्बाइंड तो हैं परन्तु समय पर उससे सहयोग नहीं लेते हैं। कोई को भी जब वार करना होता तो पहले वह अकेला करता है फिर वार करता है। हम कम्बाइंड से अलग होवें ही क्यों! अगर कम्बाइंड रूप में सदा रहें तो माया कुछ नहीं कर सकती। हम युद्ध करें फिर मायाजीत बनें, उसमें भी हम टाइम क्यों खराब करें! अगर किसी को बार-बार बीमारी आती है, तो भले हम दवाई से बीमारी खत्म करें लेकिन बार-बार बीमारी आने से कमज़ोरी तो आ ही जाती है।

बाबा की आशायें पूर्ण करने वाले कौन! हम बच्चे ही हैं। हम बाबा की आशाओं के दीपक हैं। बाबा की आश हम बच्चों के प्रति क्या है! बाबा कहते हैं मेरे समान बनो। ऐसे नहीं, मेरे समान थोड़ा-थोड़ा तो बनो। नहीं, मेरे समान पूरा बनो। आजकल तो बाबा ने विशेष कहा है कि मैं एक-एक बच्चे को राजा बच्चा बनाता हूँ। स्वराज्य अधिकारी बनाता हूँ। तो हम अपने आप से पूछें हम राजा बच्चे हैं? क्योंकि राजा माना, जिसमें कन्ट्रोलिंग पॉवर, रूलिंग पॉवर हो। पहले हम पूछें कि हमारा मन के ऊपर कन्ट्रोल है? क्योंकि मन जीते जगतजीत कहा जाता है, जो भी फीलिंग आती है, तो पहले मन में फील होता है। तो मन के राजा बने हैं? सदा ही मन के राजा बनकर रहें, लिंक जुटा रहे इसके लिए बाबा ने बहुत अच्छी ड्रिल सुनाई है।

बाबा की मुरली में "सदा" शब्द यूज़ होता है, कभी-कभी शब्द तो ब्राह्मण जीवन की डिक्शनरी में है ही नहीं। हम भी अपने से पूछें, हम जो भी कर्म करते हैं, जो बाबा कहते हैं सदा लिंक जुटी रहे, ऐसे नहीं टूटे फिर हम जोड़ें। दुबारा जोड़ने से फर्क तो पड़ता है ना। तो मन हमारा ऑर्डर में चलता है? बाबा मन, बुद्धि, संस्कार की कचहरी लगाता था क्योंकि कई बार सूक्ष्म संकल्प इतना चेक करने में तो सूक्ष्म चेकिंग चाहिए कि सारा दिन मन का मालिक बनके मन को चलाया? हम सबका लक्ष्य है कि सम्पूर्ण बाप समान बनना ही है। तो यह चेकिंग ज़रूरी है कि मन-बुद्धि-संस्कार सब कन्ट्रोल में हों। हाथ-पांव तो स्थूल कर्म कर्ता निमित्त हैं। लेकिन कभी संस्कार टक्कर में आ जाते हैं, बुद्धि भी हाँ के बजाय ना की तरफ चली जाती है। यह चेकिंग जितनी अपनी कर सकते हैं, दूसरा नहीं कर सकता है।

बाबा के प्यार की शक्ति को धारण कर वातावरण को हल्का और शान्त बना दो

सबसे अच्छा कौन है? मैं, बाबा या ड्रामा। कौन? बाबा ने ड्रामा की नॉलेज देकर अच्छा बना दिया तब कहते हैं बाबा बड़ा अच्छा है। ऐसी समझ दी है जो ड्रामा बड़ा अच्छा लगता है। हर सीन ड्रामा की देख, पार्ट बजाने वाला अच्छा वही होता है जो वैरायटी सीन देख सकता है। ड्रामा कल्याणकारी है, यह विश्वास हो चुका है। बाबा कल्याणकारी या ड्रामा कल्याणकारी है? मूंझते नहीं है पर जो क्वेश्चन उठते हैं तो बाबा उत्तर दे देता है। यह तो कहेंगे कि बाबा कल्याणकारी है, पर बाबा कहते हैं बच्चे हर ड्रामा में सीन तुम्हारे लिए कल्याणकारी है। संगमयुग है ना, कलियुग काला है, सतयुग सोने जैसे युग में जा रहे हैं। गोल्डन युग में इतने सुन्दर बन जाते हैं।

सारी दुनिया में कैसे लोग भी हैं, लेकिन शेर पर सवारी शक्ति की है। पाण्डव में भी शक्ति है, शक्तियों में भी शक्ति है। बाप से डायरेक्ट शक्ति हरेक ने ली है। शक्ति हर आत्मा को परमात्मा से पर्सनल खींचनी है। कोई किसी को नहीं दे सकता है, हाँ सहयोग दे सकते हैं। शक्ति प्रार्थना करने से भी नहीं मिलती है, मांगने से भी नहीं मिलती है। हुकुम चलाने से भी नहीं मिलती है। बाबा आप यह कर लो ना, हमारा काम जल्दी से करवा दो ना! ऐसे शक्ति नहीं मिलती है। बाबा के हुकुम पर चलने से शक्ति मिलती है। बाबा कहता, मैं जो कहता हूँ तुम कर लो, मेरे को नहीं बोलो, मेरा कर दो। मेरे को कहेंगे तो मैं नहीं करूंगा। मैं जो बोलता हूँ, पहले वो कर लो फिर सब करूंगा, हज़ार गुणा करूंगा। परन्तु भगवान से, सच्ची दिल से उसको अपना बनाकर, निश्चिंत रहकर, निश्चय के बल से अपने को जान, मेरे को पहचान, मेरा बाप कौन? जब तक अपने को नहीं जाना है, तो बाप को भी नहीं जान सकते। यह सिर्फ कॉपी पर नोट नहीं करो, दिमाग में नोट करो। अपने को अच्छी तरह से जान मैं शरीर नहीं, आत्मा हूँ। शरीर के नाम का भी महत्व है, मुझे किसी ने कहा कि तुम मेरे जान की, की हो। अपनी जान बचानी हो तो चाबी रखो अपने हाथ में। जिसको चाबी सम्भालना नहीं आता, उसकी लाइफ क्या होगी? उसके पास खज़ाना भरपूर है लेकिन चाबी नहीं है तो न खुद यूज़ कर सकता है, ना किसी को दान कर सकता है। तो बाबा ने कोई लॉकर में रखने के लिए खज़ाना नहीं दिया है। यहाँ तो लॉकर भी लूटने वाले हैं। बाबा खज़ाना देता है, अभी यूज़ करो और दान करो। यूज़ करो तो पर्सनैलिटी लगे कि हाँ इसके पास खज़ाना है। मस्तक से पता चलता है।

हमारा दिमाग इतना ठीक हो जो सेकण्ड में बात कैच कर सके। हमारी शक्ल शिकन वाली न हो। बाबा की समझ से अभी दिमाग ठीक काम करता है, करके पश्चाताप नहीं करता है, समय व्यर्थ नहीं गंवाता है। हर बात में, हर हालत में निर्णय करने की, परखने की शक्ति जिसकी तेज नहीं है वो समय गंवाता है, भाग्य गंवाता है। हाथों में भाग्य सामने है, सबकुछ है, पर उससे कैसे पदमापदम भाग्य बने, उसमें बुद्धि काम नहीं करती है।

बुद्धि स्वच्छ सोने जैसी चाहिए। सतोगुणी बुद्धि अच्छी चीज़ को अपनी तरफ खींच लेगी। उसमें हिम्मत बच्चे की, मदद बाप की। बाबा बड़ा जवाहरी है, बाबा देखता है कि यह हिम्मतवान बच्चा है, यह विजयी तो क्या, नूरे रत्न बनने वाली आत्मा है। इसको वैल्यू है अपने बाबा के ज्ञान रत्नों की, तो हज़ार गुणा वरदान दे देता है। फिर तन में, धन में, सम्बन्ध में, सबमें मदद मिलती है।

एक बाप के प्यार में आकर्षित हो उसमें मस्त रहो

जब हम यज्ञ में आये तो पहला एक पेपर सामने आया, उस समय हम सब ब्रिटिश के ज़माने का नम्बरवन रेशम पहनते थे। जैसे ही हम भट्ठी में आये बाबा ने कहा खद्दर पहनो। उसी दिन से छूट गया। संगठन में रहना हो तो पहले निंद्राजीत बनो, फिर अपनी पहरवाइश बदलो, फिर भोजन बदलो, फिर लौकिक भूलो, इसके बाद संगठन में रहना सीखो। जो संगठन में मिले वही खाना है। लेकिन हमको कभी नाममात्र भी फीलिंग नहीं आई कि यह डिफिकल्ट है। बाबा मिला, जहान मिला। हम सहजयोगी हैं, तो ये सब पेपर पास करते जाओ। और सर्व कर्मेन्द्रियां मेरे ऑर्डर में रहें। ये सर्टीफिकेट ले लो। अगर कोई भी मन में फीलिंग है, यह बात मेरे को डिफिकल्ट है, तो उसको इस भट्ठी में मनन करके समाप्त करो। मन में कोई ऐसी भारी वृत्ति हो तो सोचो, चिन्तन करो, लिखो, लिखकर अपने माइंड को क्लीयर करो। दुनिया की कोई भी बात आकर्षित करती हो, कोई को टी.वी. आकर्षित करते हो, कोई को टीचर आदि खींचते हो, किधर भी बुद्धि खींचती हो तो उस खिंचाव को समाप्त कर देना है। कभी दुर्गा, काली, अम्बा, शक्तियों की हिस्ट्री में अनेक असुर आये लेकिन वह किसके खिंचाव में नहीं आई। ये हमारी ही हिस्ट्री है। हम ही विजयी हैं। हम विजयी थे, विजयी हैं, विजयी रहेंगे। हमें कोई भी अपने आकर्षण में नहीं लाये। एक बाप के प्यार में आकर्षित हो उसमें मस्त रहो। मौलाई मस्ती चढ़ी हुई हो। हम सभी एक माशूक के आशिक हैं। आशिक के दिल में सदा माशूक ही बसता है। वह इतना मस्त होता है कि प्राण चले जायें परन्तु वह मस्ती नहीं जा सकती। अन्दर से अनुभव होता है कि हमें प्यार के सागर बाप ने अपने प्यार की गोदी में समा लिया है। उसी प्यार में सदा डूबे रहते। बाबा के प्यार की रस्सी इतनी मजबूत हो जो दुनिया में किसी की भी ताकत नहीं जो उसे काट सके। मैंने देखा है जितनी बांधेलियां होती हैं उतना ही बाबा से प्यार गहरा होता है। गोपिकाओं को जितना बन्धन होता है उतनी ही लगन होती है। कई कहते हैं कि अभी तो साकार में बाबा है नहीं, दादियां भी इत्तफाक से मिलती हैं। सेवा में सदा व्यस्त रहते हैं, बाबा प्यारा लगता है, परन्तु बाबा के प्यार का अनुभव नहीं है, क्यों? मैं बाबा के प्यार में ऐसी आकर्षित रहूँ जो और कोई मुझे खींचे नहीं। नाम मात्र भी मेरी दृष्टि दूसरों में या दूसरों की मेरे में नहीं जावे। सर्विस अच्छी लगती है, जीवन अच्छी लगती है इतने तक ही है या सदा लव में लीन भी रहते हो? यदि सदा लव में लीन रहते तो याद की मेहनत नहीं करनी पड़ती है।

संकल्प करना आधा कार्य करने के बराबर है

- गतांक से आगे...

राजयोगी ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

मन रूपी सिंहासन पर एक ही राजा बैठ सकता है। एक नगरी का एक ही राजा होता है। चाहे आप इस मन रूपी सिंहासन पर शिवबाबा को बिठा दीजिए, चाहे शत्रु को बिठा दीजिए।

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि जिसको वृत्ति में, संकल्प में या स्मृति में भी हमने शत्रु मान लिया तो हमारी लुटिया डूब गई। हम तैर नहीं सकते, इस संसार सागर, भवसागर के पास नहीं हो सकते हैं क्योंकि हमें यहाँ से तैरकर ले जाने वाली स्मृति है। स्मृति रूपी नांव में ही यह जीवन की यात्रा जब हम करेंगे तब इस कलियुगी ठौर से सतयुगी ठौर की ओर जायेंगे। दूसरा कोई तरीका नहीं क्योंकि कहा गया है "आप जैसा सोचेंगे वैसा बनेंगे"। बनने का और कोई तरीका नहीं है। अब आगे...

बाबा ने भी कह दिया है कि आप अगर ठीक बनना चाहते हैं तो ठीक प्रकार की स्मृति रखो। गिरावट आई है- खराब बातों की स्मृति से, खराब संकल्पों से, खराब वृत्ति से। स्मृति, वृत्ति और संकल्प गिरने-गिराने का साधन बने हैं। और अब अगर उठना है तो हमें अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाना है। और कर्मों को श्रेष्ठ बनाने का तरीका केवल मात्र यही है कि हम अपने संकल्प, स्मृति और वृत्ति को ठीक करें। लेकिन उसमें सबसे बड़ी बाधा वहाँ उपस्थित होती है, जहाँ हम किसी को शत्रु मान बैठते हैं। और जिस व्यक्ति ने जितने शत्रु बना रखे हैं, उतना उसका मन उनकी तरफ जायेगा। उससे मिला हुआ है, अरे इसके सामने बात मत करना यह सब उसको बतायेगा, फिर जो मेरे शत्रु का दोस्त होगा, उसे भी अपना शत्रु ही समझेंगे। संसार में लोग आमतौर से यही मानकर चलते हैं। तो शत्रुपन की अगर हमारे मन में वृत्ति होगी तो हम योगी कैसे बनेंगे?

हम कहते हैं हमारी बिन्दुरूप स्थिति हो, हमारी बीजरूप अवस्था हो उसमें अगर शत्रुपन का भाव मन में घुसा हुआ होगा तो बिन्दु के साथ और चीज़ें मिल जायेंगी। तो मन में आज से यह संकल्प कीजिए कि प्यारे बाबा - इस दुनिया में मेरा कोई शत्रु नहीं है। मेरे मन में किसी के प्रति भी शत्रुता का भाव न हो। बाबा ने कह दिया हमारे शत्रु हमारे पांच विकार हैं, इनसे हमारी लड़ाई है। किसी मनुष्य से या किसी व्यक्ति से हमारी लड़ाई नहीं है, हमारा क्या लेना-देना है। अगर कोई अपने स्वभाव-संस्कारों से कुछ करता भी है तो जो जैसा करेगा सो पायेगा। आप चिंता क्यों करते हो? जो गलत काम करता है, आप उसके लिए क्यों सोचते हो? कोई बुराई कर रहा है, खराबी में फंसा हुआ है आप दुःखी क्यों होते हो? अगर हम मानते हैं कि जो योगी, पवित्र लोग हैं, भगवान के बने हैं, उनकी आज्ञा पर चलते हैं, उनकी दुआ काम करती है- तो अगर दुआ होती है तो बद्दुआ भी होती होगी, अगर मन में किसी के लिए बुरा सोचते हैं तो बद्दुआ भी होती होगी। मन में अगर आता है कि इसने हमें बहुत दुःखी कर रखा है, हम इससे बहुत परेशान हैं, इस व्यक्ति ने हमारे जीवन में बहुत कलेश पैदा किया हुआ है। उसके प्रति उसकी वह भावना निकलती होगी तो बद्दुआ भी तो निकलती होगी। दुर्वासा ऋषि भी तो होंगे।

अगर हम किसी को शत्रु मान लेंगे तो हमारे मन में सद्भावना के बजाय दुर्भावना भी आ जायेगी। अगर दो-चार व्यक्ति भी उसके बारे में ऐसा सोचें तो वह घातक होगा। आदमी किसी को तलवार भी मारता है तो सबसे पहले मन में सोचता है कि इसको तलवार मारूं, क्योंकि बहुत से महान व्यक्तियों ने कहा है जब आप मन में सोच लेते हैं कि यह बुरा काम हम करें, तो वह बुरा काम तो हो ही गया। सिर्फ एक कदम का फासला रहा। अगर आपको मौका मिलता या रूकावट देखने में नहीं आती तो आप कर ही डालते। इसका मतलब मन से सोचना भी आधा करने के बराबर हुआ। तो अगर हम किसी के प्रति शत्रु भाव रखेंगे और पाप करते रहेंगे, उसको दुःख देने के संकल्प करते रहेंगे तो बाबा के महावाक्यों अनुसार दुःख देंगे तो दुःखी होके मरेंगे। अगर हम दुःखी हैं या हमारे मन में किसी को दुःख देने का चिंतन चलता है तो योगी बनने का क्या फायदा हुआ? हम योग की कमाई से, योग की थोड़ी बहुत जो शक्ति अर्जित करते हैं, उस शक्ति से किसी को घाव करने पर तुले हुए तो नहीं हैं? यह जो शत्रुता का, वैर का भाव है, घृणा का भाव है, ईर्ष्या-द्वेष का भाव है, किसी के प्रति कटुता का भाव है, यह सबसे बड़ा खराब भाव है। ऐसा मन में भाव होगा तो आप कभी भी योग में टिक नहीं सकते क्योंकि मन रूपी सिंहासन पर एक ही राजा बैठ सकता है। एक नगरी का एक ही राजा होता है। चाहे आप इस मन रूपी सिंहासन पर शिवबाबा को बिठा दीजिए, चाहे शत्रु को बिठा दीजिए। जैसे ही आप किसी व्यक्ति के प्रति घृणा-द्वेष का भाव, शत्रुता का भाव करेंगे शिवबाबा भाग जायेगा। क्योंकि एक म्यान में दो तलवारें इकट्ठी नहीं आतीं। और अगर आपने शिवबाबा को बिठाया तो शत्रु भाव आ नहीं सकता क्योंकि बाबा ने कहा हुआ है- बाबा-बाबा कहोगे तो माया भाग जायेगी।

योगी व्यक्ति अगर परमात्मा से योग लगाना चाहता है उसका मन का मीत वही है। और अगर उसकी बजाए वह यह समझता है कि फलां ने मुझे तंग किया है, फलां ने परेशान किया है, फलां दुःखी करता है, फलां व्यक्ति खराब है तो कहा गया है- आत्मा अपना मित्र आप है, आत्मा अपना शत्रु भी आप ही है। तो हम स्वयं से स्वयं ही शत्रुता कर रहे हैं, हमारे से कोई और नहीं कर रहा है। इसलिए सबसे पहले हमारे योगी जीवन में सबके प्रति शुभ भावना और शुभ कामना रहे। जब तक हमारे मन में शुभ भाव नहीं है, तब तक वह योगी ही नहीं है।

सोलापुर-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ के सोलापुर उपक्षेत्र की ब्र.कु. बहनों एवं भाइयों ने पुणे राजभवन में राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू से मुलाकात की एवं गुलदस्ता भेंट कर उनका सम्मान किया। इन भाई-बहनों में ब्रह्माकुमारीज़ सोलापुर उपक्षेत्र संचालिका ब्र.कु. सोमप्रभा दीदी, बार्शी सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. संगीता दीदी, बीड सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. प्रज्ञा दीदी, वैराग उपसेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मीरा दीदी, सोलापुर से ब्र.कु. सुजाता दीदी, मोहन बुचडे, सुरेश जगदाळे, विलास बारंगुळे, महेश कुकरेजा, तुलसी गव्हाणे आदि शामिल रहे।

थाने-महा.। माननीय मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ हैं शिवाजी नगर स्थित ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र की संचालिका डॉ. ब्र.कु. सरला बहन व अन्य। साथ ही माननीय मुख्यमंत्री को ब्रह्माकुमारीज़ के मुख्यालय माउण्ट आबू के ग्लोबल सम्मिट में शामिल होने का निमंत्रण भी दिया गया।

अलीराजपुर-म.प्र.। श्रीमती संपतिया उईके,कैबिनेट मंत्री मध्य प्रदेश जन अभियांत्रिकी का गुलदस्ता भेंट कर स्वागत करते हुए ब्र.कु. नारायण भाई व ब्र.कु. माधुरी बहन। साथ हैं श्रीमती अनीता चौहान,सांसद अलीराजपुर झाबुआ रतलाम व मकू परवाल जी।

बैतूल-म.प्र.। भारत सरकार के नवनिर्वाचित केन्द्रीय राज्य मंत्री एवं बैतूल हरदा हरसूद क्षेत्र के लोकप्रिय सांसद माननीय डी.डी. उइके अपने नगर आगमन पर सर्वप्रथम ब्रह्माकुमारीज़ के भाग्यविधाता भवन सेवाकेंद्र में परमपिता शिव बाबा और ब्रह्माकुमारी बहनों का आशीर्वाद लेने पहुंचे। सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी एवं ब्र.कु. सुनीता दीदी ने तिलक लगाकर एवं गुलदस्ता भेंट करके उनका स्वागत किया और शुभकामनाएं दी। माननीय मंत्री के साथ स्थानीय विधायक हेमंत खंडेलवाल, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, घोड़ाडोंगरी विधायक गंगा उईके, भाजपा जिला अध्यक्ष आदित्य शुक्ला आदि गणमान्य लोग भी शामिल रहे। साथ ही कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ मुलताई संचालिका ब्र.कु. मालती दीदी, ब्र.कु. पूर्णिमा बहन, ब्र.कु. अरुणा बहन, ब्र.कु. स्वाति बहन, ब्र.कु. सविता बहन व ब्र.कु. नंदकिशोर भाई सहित अन्य भाई-बहनें भी मौजूद रहे।

विजयवाड़ा-आ.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा प्रशासकों, अधिकारियों और प्रबंधकों के लिए 'ए' कन्वेंशन सेंटर में 'बेहतर शासन के लिए मानसिकता का नवीनीकरण' विषय पर आयोजित सम्मेलन में ब्रह्माकुमारीज़ के प्रशासक प्रभाग की अध्यक्षा राजयोगिनी ब्र.कु. आशा दीदी, आंध्र प्रदेश राज्य सरकार पुलिस शिकायत प्राधिकरण की आईएएस बी. उदय लक्ष्मी व कई सार्वजनिक व निजी क्षेत्रों के प्रतिष्ठित अधिकारियों सहित ब्रह्माकुमारीज़ वारंगल उपक्षेत्र की क्षेत्रीय प्रभारी ब्र.कु. सविता दीदी, ब्र.कु. शांता बहन, ब्र.कु. पद्मजा बहन व अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें शामिल रहे।

ग्वालियर-म.प्र.। कलेक्टर श्रीमती रुचिका चौहान,आईएएस को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चेतना बहन। साथ हैं ब्र.कु. आदर्श दीदी।

बेंगलुरु-कुमारा पार्क(कर्नाटक)। बी. दयानंद,आईपीएस,पुलिस आयुक्त को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. श्रीलक्ष्मी बहन, ब्र.कु. प्रिया बहन तथा अन्य।

अमरावती-महा.। बडनेरा मतदार संघ के विधायक रविभाऊ राणा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सीता दीदी। साथ हैं ब्र.कु. सुनंदा दीदी व ब्र.कु. रोहिणी बहन।

राजगढ़-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए पूर्व विधायक रघुनंदन शर्मा, जिला कांग्रेस महामंत्री राशिद जमील, विश्व हिंदू परिषद के जिला अध्यक्ष तेजेंद्र उपाध्याय, समाजसेवी प्रताप सिंह सिसोदिया तथा ब्र.कु. मधु दीदी।

दुर्गा जी की अष्ट शक्तियां दुर्ग की तरह...

हम सभी जितने भी भक्त आत्मायें हैं जो नवरात्रे को मनाते हैं, पूजते हैं और उस समय एक अलग तरीके से अपने जीवन को ढालते हैं। वो सभी हमेशा ये प्रयास करते हैं कि हमारे ऊपर कृपा हो, हमारे ऊपर दया-दृष्टि हो देवी की। अब ये दया दृष्टि, कृपा दृष्टि हमारे ऊपर कैसे आयेगी? उसका एक सबसे बड़ा प्रमाण या कह सकते हैं कि उसका एक बहुत अच्छा आधार क्या है?

कहा जाता है कि इस दुनिया में कर्म खराब होने के सिर्फ दो कारण हैं। एक हमको परख शक्ति नहीं है, दूसरा हमारे अन्दर निर्णय शक्ति नहीं है।

कहा जाता है कि जो व्यक्ति मोह ग्रस्त है वो ज़िंदगी में कभी निर्णय नहीं ले सकता। और जो व्यक्ति इस दुनिया में सारे विकारों के वश है उसके तो क्या कहने! तो हम सभी इस बात को इस तरह से समझ सकते हैं कि अगर हमारे परखने की शक्ति होती तो सबसे पहला, हमारी पहली समस्या वो हमारे शरीर की है। हमें पता है कि हमारे शरीर को क्या खाना चाहिए, कैसे खाना चाहिए, कब खाना चाहिए, किस चीज़ से मुझे तकलीफ होती है फिर भी हम उन्हें खाते हैं और उसके खाने के बाद फिर हम तकलीफ में आते हैं। इसका मतलब परख शक्ति अगर थोड़ी बहुत है भी तो निर्णय शक्ति नहीं है कि नहीं, मुझे ये नहीं करना है।

तो आप सोचो ये दोनों शक्तियों की कमी की वजह से सारी शक्तियां हमारे पास कम हो गईं। जैसे हम किसी को समा नहीं पाते। किसी का हम सामना नहीं कर पाते। किसी को हम सहन नहीं कर पाते। किसी को हम सहयोग नहीं दे पाते। कारण क्या है कि हम सभी इन दो शक्तियों की कमी के कारण उलझ गये। हमारा जीवन इसी के ऊपर ही तो आधारित है। अगर परख शक्ति होती तो परिस्थिति की परख होती। समाज की परख होती। हर कर्म की परख होती। तो न जेल होता, न पुलिस स्टेशन होता, न हॉस्पिटल होता। ये कोई भी चीज़ आज हमारे जीवन में नहीं होती। ये जो अष्ट शक्तियां हैं ये हमारे कर्म का दुर्ग हैं। जैसे एक किले के अन्दर व्यक्ति पूरी तरह से सेफ रहता है, उसको कहीं से कोई सेक नहीं लग सकती, आंच नहीं लग सकती। कोई दुश्मन उसके ऊपर आक्रमण नहीं कर सकता। ऐसे ही ये सारी शक्तियां भी हमारे साथ जुड़ी हुई हैं। जब ये शक्तियां हमारे साथ जुड़ जाती हैं, काम करती हैं, तो कोई भी चीज़ हमको परेशान नहीं कर सकती। इसलिए दुनिया में दिखाते हैं, शास्त्रों में दिखाते हैं कि जब असुरों का संहार करने के लिए कहा जाता था, जो भी उस समय परेशान होता था तो देवी का आह्वान करता था। देवी प्रकट होकर कहती थी कि उसका ये समय है, उस समय में, उस बेला में अगर उसको मारा जायेगा तो वो व्यक्ति दुबारा जन्म नहीं लेगा। मतलब वो असुर हमेशा के लिए नष्ट हो जायेगा।

अब ये चीज़ हमारी दिनचर्या के साथ ही तो है। सुबह क्या करना चाहिए, शाम को क्या करना चाहिए, रात को क्या करना चाहिए। और ये सारी चीज़ें हमारे अन्दर ऐसा नहीं है कि नहीं है, है, लेकिन इसकी शक्ति नहीं है, ताकत नहीं है, करने का बल नहीं है। ये न होने की वजह से हम कर्म को सही तरीके से सही दिशा नहीं दे पा रहे। तो ये जो नवरात्रे हैं नौ शक्तियां, आठ शक्तियां, जो आठ नवरात्रे नौ दुर्गा अष्ट शक्तियों के साथ दिखाया गया। ये अष्ट शक्तियां जाग्रति की अवस्था ही तो है कि हमारे अन्दर समझ होने के बावजूद भी गलती क्यों हो रही है? क्योंकि हम उन सारी चीज़ों को यूज़ नहीं कर पा रहे। प्रयोग में नहीं ला पा रहे। इसलिए जब तक दो शक्ति खासकर परखना और निर्णय करना, अगर ये हमारे साथ जुड़ जायें गहराई से और हमको गहरी समझ आ जाये कि हमारे कर्म सिर्फ इस वजह से खराब हैं तो हम सारी चीज़ें वैसे ही कर लेंगे जैसा हम चाहते हैं। तो हर बार नवरात्रि आती है। हर बार आप सभी आरती, पूजन, वंदन सबकुछ करते हैं। लेकिन उससे फायदा तो तब होगा जब हम अपने अन्दर शक्ति को डेवलप करें, शक्ति को भी उजागर करें। और वो शक्तियां उजागर कब होंगी जब हमारे अन्दर पवित्रता का बल होगा। पवित्रता का बल भी परख शक्ति से आता है, निर्णय शक्ति से आता है। प्रेम का बल भी परख शक्ति और निर्णय शक्ति से आता है। आनंद का बल भी परख शक्ति और निर्णय शक्ति के आधार से आता है।

आज सबसे बड़ा दुर्ग जो हमारा टूटा हुआ है, किला टूटा हुआ है, उसका कारण सिर्फ ये है कि हमारी सारी शक्तियां कमज़ोर पड़ गई हैं। हर समय काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, आलस्य, भय जैसा असुर कभी भी हमारे ऊपर आक्रमण कर देता है। और उसमें हम उलझकर रह जाते हैं। तो क्यों न हम इस बार इस तरह से इस बात को लेते हैं कि अगर इस नवरात्रि पर हम जागरण करें तो जागरण में सबसे पहले हम अपने सातों गुणों का जागरण करें। सातों गुणों को जागृत करें। इन सातों गुणों को इतना जागृत करें, इतना जागृत करें कि वो हमारी शक्ति बन जाये। जब ये सारी चीज़ें हमारी शक्ति के रूप में बदल जायेंगी तब वो सारी चीज़ें हमारी काम करना शुरू करेंगी। फिर कोई भी ऐसा विकार जिसको असुर कहा जाता है वो हमारे किले को भेद नहीं सकता। फिर हम उसमें सेफ रहेंगे, स्वस्थ रहेंगे, मस्त रहेंगे, और व्यस्त भी रहेंगे। और आगे भी बढ़ते रहेंगे, उन्नति करते रहेंगे।

तो सही प्रामाणिक रूप से इस त्योहार को हमें मनाना चाहिए। तभी तो विजय होगी ना! इसलिए विजय का सबसे बड़ा आधार है अपनी शक्तियों को जागृत करना। तो चलो इस नवरात्रि पर हम करते हैं और देखते हैं कि क्या परिवर्तन आता है।

ये जो अष्ट शक्तियां हैं ये हमारे कर्म का दुर्ग हैं। जैसे एक किले के अन्दर व्यक्ति पूरी तरह से सेफ रहता है, उसको कहीं से कोई सेक नहीं लग सकती, आंच नहीं लग सकती। कोई दुश्मन उसके ऊपर आक्रमण नहीं कर सकता। ऐसे ही ये सारी शक्तियां भी हमारे साथ जुड़ी हुई हैं। जब ये शक्तियां हमारे साथ जुड़ जाती हैं, काम करती हैं, तो कोई भी चीज़ हमको परेशान नहीं कर सकती।

मरोली-गुज.। रेलवे स्टेशन ऑफिस में स्टेशन मास्टर उदय सिंह तथा अन्य स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. मुकेश बहन तथा अन्य।

बेंगलुरु-कुमारा पार्क(कर्नाटक)। एन.वी. अंजारिया,कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. बिंदु बहन। साथ हैं ब्र.कु. रत्ना बहन व ब्र.कु. मीनाक्षी बहन।

राजकोट-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ के राजनगर राजकोट सेवाकेंद्र द्वारा विशेष डॉक्टर्स के लिए आयोजित 'अलौकिक रक्षाबंधन और स्नेह मिलन' कार्यक्रम के दौरान समूह चित्र में डॉ. सुरेजा, डॉ. गजिपारा, ब्र.कु. रीटा बहन, अन्य डॉक्टर्स व ब्र.कु. भाई-बहनें।

अमरावती-महा.। पुलिस कमिश्नर नवीन चंद्र रेड्डी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सीता दीदी। साथ हैं ब्र.कु. अश्विनी बहन व ब्र.कु. मंजू बहन।

खरगोन-म.प्र.। जिला न्यायालय मण्डलेश्वर जिला खरगोन के प्रशासनिक अधिकारी शिरीष महाजन को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मंगला बहन। साथ हैं ब्र.कु. बसु बहन।

मऊगंज-म.प्र.। एसडीएम बी.पी. पांडे, तहसीलदार नई गढ़ी दीपक तिवारी, देवतालाब तहसीलदार श्यामलाल मोगरे एवं तहसीलदार मऊगंज सौरव मरावी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. लता बहन व ब्र.कु. पूर्णिमा बहन।

कर्म बंधनों को खत्म कैसे करें

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

ईश्वरीय परिवार के अंदर ही हमारा एक-दूसरे से कार्मिक संबंध जुड़ता है। इसलिए हमें कर्मयोगी, ये परिवार बनाता है। बाकी अगर परिवार न हो खाली ईश्वर से ही प्यार हो तो वो योगी तो दुनिया में भी कई हैं। लेकिन बाबा ने हम बच्चों को एक ऐसे मीठे संबंध में बांधा कि ये बेहद का परिवार, बेहद के बाप का परिवार ये हमारा परिवार है। इसलिए ये स्वाभाविक रीति से हम कर्मयोगी बनने लगते हैं। आज अगर दुनिया के अंदर देखें तो मनुष्य के कर्म बंधन बनते जा रहे हैं और उसको बोझ का अनुभव करा रहे हैं। अनेक प्रकार के बोझ से बोझिल होते जा रहे हैं। ये बंधन कैसे बनता है ये भी हमें पता चल गया। तो जितना व्यक्ति देह अभिमान, देह अहंकार, या देहभान के वशीभूत होकर कर्म करता है उतना ही ये बंधन बनता जाता है।

दूसरा, जितना व्यक्ति के अन्दर स्वार्थ भाव प्रगट होता है उतना वो बंधन क्रियेट करता है।

तीसरा, जब कर्मेन्द्रिय की अधीनता आ जाती है, गुलाम हो जाते हैं इन्द्रियों के और आसक्ति वश कर्म करते हैं तो ये कर्म बंधन बनता है।

चौथी बात, किस रूप से हमने बंधन क्रियेट किये? जब दोष दृष्टि, वृत्ति होती है तब हमारे कर्म बंधन बनते हैं। दोष दृष्टि, वृत्ति यानी जिसको भी देखते हैं हर इंसान के अन्दर विशेषता भी है तो कमज़ोरियां भी हैं। हरेक के अन्दर अच्छाई भी है, बुराई भी है लेकिन जब हमारी दृष्टि, वृत्ति के अन्दर दोष प्रगट होने लगते हैं ये व्यक्ति ऐसा है, ये व्यक्ति ऐसा करता है, उसके दोष के तरफ ही हमारी दृष्टि और वृत्ति हमेशा जाती रहे तो ये कर्म बंधन क्रियेट करता है। तो कर्म बंधन अनेक बना दिए हमने। विकारों के वशीभूत होकर कर्म करना ये बंधन क्रियेट करता ही है। लेकिन ये सब बातें भी सूक्ष्म में हमारे बंधन क्रियेट करते गये। अब उससे मुक्त होकर हमें कर्मयोगी बनना है। तो उसकी विधि क्या है?

आत्म अभिमानी या देही अभिमानी उसको नहीं कहा जाता कि हम रटते रहें कि मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, रटने का नहीं है लेकिन उसका स्वरूप बनना और स्वरूप बनने का मतलब है कि आत्मा के सातों गुण, उसकी ऊर्जा नैचुरल रूप में हमारे इन्द्रियों के द्वारा हमारे कर्म में प्रवाहित होने लगे।

पहली विधि जो कहा देह अभिमान, देह भान और देह अहंकार को खत्म करने की जो बाबा ने बताई। वो बताई कि बच्चे तुम आत्मा हो। ये देह नहीं हो। और ये जागृति आते ही आत्म स्थिति, आत्म मनोस्थिति जितनी हमारी बनती गई, आत्मिक भाव जितना हमारा डेवलप होता गया, विकसित होता गया। हरेक को आत्मिक दृष्टि से हमने देखना आरंभ किया तो धीरे-धीरे वो दोष दृष्टि परिवर्तन हो गई और विशेषता भी नज़र आने लगी कि हाँ इसमें ये भी अच्छाई है, ये भी अच्छाई है।

तो इसीलिए हमारी जब ये दृष्टि, वृत्ति परिवर्तन हुई तो देही अभिमानी बनना हमारे लिए आसान हो गया। देही अभिमानी माना आत्मा के सातों गुणों के स्वरूप बनकर, उसमें स्थित होकर कर्म करना। आत्म अभिमानी या देही अभिमानी उसको नहीं कहा जाता कि हम रटते रहें कि मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, रटने का नहीं है लेकिन उसका स्वरूप बनना और स्वरूप बनने का मतलब है कि आत्मा के सातों गुण, उसकी ऊर्जा नैचुरल रूप में हमारे इन्द्रियों के द्वारा हमारे कर्म में प्रवाहित होने लगे। सहजता से, शांति से, प्रेम से, सुख स्वरूप होकर, दूसरों को भी सुख देने के भाव से जब ये ऊर्जा हमारे हर कर्म में प्रवाहित होने लगती है तो कहा जाता है कि हाँ देही अभिमानी होकर हम कर्म कर रहे हैं तो वहाँ ये मैंपन, देह अभिमान वाला धीरे-धीरे क्षीण होने लगता है। और आत्म स्थिति हमारी पॉवरफुल होने लगती है, मजबूत होने लगती है।

दूसरा, मैंपन को खत्म करने की विधि जो बाबा ने बताई- एक तो आत्म अभिमानी होना, दूसरा जो बाबा कहते हैं कि करनकरावनहार करा रहा है मैं निमित्त हूँ। इस भावना को जागृत करना। और हर वक्त ये इमर्ज रूप में रहे कि करनकरावनहार बाबा करा रहा है। और मैं निमित्त हूँ तो वो मैंपन समाप्त होने लगता है।

तीसरी विधि है मैंपन को खत्म करने की जो बाबा कहते हैं कि बच्चे स्वमान में स्थित हो जाओ। रोज़ सुबह कोई न कोई स्वमान स्वयं के अन्दर जागृत करो और उस स्वमान में स्थित होकर हर कर्म करो। तब वो कर्म बंधन नहीं बनेगा। लेकिन वो संबंध बनने लगेगा और उस संबंध में आकर हम कर्म करेंगे। तो उस मैंपन को खत्म करने की ये तीन विधि हैं। देही अभिमानी बनना, दूसरा, करनकरावनहार बाबा करा रहा है, और तीसरा स्वमान में स्थित होकर कर्म करना। ये धीरे-धीरे उस मैंपन को एकदम क्षीण कर देगा।

ग्वालियर-म.प्र.। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर "नई दुनिया" दैनिक समाचार पत्र कार्यालय पर वरिष्ठ पत्रकार बलराम सोनी सहित सभी पत्रकार भाइयों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. रोशनी, ब्र.कु. सुरभि तथा ब्र.कु. प्रहलाद।

छतरपुर-किशोर सागर(म.प्र.)। रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा 25 एमपी बटालियन छतरपुर में 'स्वयं की सुरक्षा से देश सुरक्षा' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी बहनों द्वारा सभी एनसीसी कैडेट्स एवं कमांडेंट को रक्षासूत्र बांधा गया।

इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। बीएसएफ के डिप्टी कमांडेंट नरेश कुमार एवं जवानों को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. आशा बहन, ब्र.कु. नारायण भाई, ब्र.कु. नीतू बहन तथा अन्य।

मुम्बई-गोराई। श्रीमती मंदाकिनी नरोटे,वरिष्ठ पुलिस इंस्पेक्टर,गोराई गांव एवं अन्य पुलिस कर्मियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. पारुल बहन, ब्र.कु. सुरेश भाई तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनें।

खेड़ा-गुज.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र पर मंगला गौरी व्रत के उपलक्ष्य में विशेष कुमारियों के लिए आयोजित स्नेह मिलन कार्यक्रम में सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. दक्षा बहन ने सभी कन्याओं को गौरी व्रत का आध्यात्मिक रहस्य समझाया।

राजकोट-रविरत्ना पार्क(गुज.)। 'रक्षाबंधन की डोर लाए वसुधैव कुटुम्बकम की ओर' थीम पर बच्चों के द्वारा राखी स्पर्धा के पश्चात् समूह चित्र में प्रतिभागी बच्चों के साथ ब्र.कु. गीता बहन, ब्र.कु. डिम्पल बहन तथा अन्य।

हरी मिर्च लाये स्वास्थ्य में हरियाली...

स्वास्थ्य

हरी मिर्च का उपयोग करने से खाने में स्वाद आ जाता है। यदि खाने में मिर्च ना हो तो आप चाहे कितने ही मसाले क्यों ना डाल दें पर खाना मजेदार नहीं लगेगा। वैसे तो मिर्च कई रंगों में आती है जैसे लाल, पीली, हरी आदि।

लेकिन आज हम आपको अधिक उपयोग होने वाली यानी हरी मिर्च की जानकारी दे रहे हैं। हम आपको बताना चाहते हैं कि हरी मिर्च का तड़का केवल खाने का स्वाद ही नहीं बढ़ाता बल्कि इसमें शरीर के लिए ज़रूरी कई सारे विटामिन भी मौजूद होते हैं। आपको भले ही जानकर आश्चर्य लग रहा होगा लेकिन इसके सेवन से आपको सेहत के कई सारे फायदे मिलते हैं।

जिन लोगों में आयरन की कमी होती है उनके लिए हरी मिर्च बहुत फायदेमंद है क्योंकि हरी मिर्च आयरन का प्राकृतिक स्रोत है।

हरी मिर्च विटामिन के का अच्छा स्रोत होता है। इसलिए इसे खाने से ऑस्टियोपोरोसिस की संभावना कम होती है। इसमें मौजूद एंटीबैक्टीरियल गुण कई प्रकार के संक्रमण से हमें दूर रखते हैं। चाहे पतली वाली हरी मिर्च हो या शिमला मिर्च, दोनों में ही अच्छी मात्रा में एंटीऑक्सीडेंट पाए जाते हैं...

हरी मिर्च के फायदे

हरी मिर्च खाने से हृदय को फायदा

हरी मिर्च हमारे हृदय के स्वास्थ्य को भी सुधारती है। यह बुरे कोलेस्ट्रॉल को कम करके धमनियों के सख्त होने को रोकती है। यह फिब्रिनोल्टिक की गतिविधि को बढ़ाती है। फाइब्रिनोलिटिक हमारे शरीर में खून को जमने से रोकने में मदद करता है जिससे दिल का दौरा आने की संभावना कई हद तक कम हो जाती है।

हरी मिर्च के वजन घटाने में लाभ

बहुत से लोगों को सुनकर थोड़ा आश्चर्य लगेगा। पर हरी मिर्च के सेवन से वजन घटाने में भी मदद मिलती है। जब हम तीखा खाना खाते हैं तो हमारे शरीर में ऊष्मा बनती है। यह ऊष्मा हमारे शरीर से कैलोरी को जलाती है। इसका सेवन मेटाबोलिज़्म के स्तर को भी बढ़ाता है।

हरी मिर्च के लाभ आँखों के लिए

हरी मिर्च का सेवन हमारी आँखों के लिए भी फायदेमंद है। इसमें मौजूद विटामिन सी और बीटा कैरोटीन आँखों के लिए अच्छे होते हैं। हमेशा हरी मिर्ची को अंधेरी जगह पर रखें क्योंकि रोशनी और धूप के संपर्क में आने से इसके अंदर का विटामिन सी खत्म हो जाता है।

हरी मिर्च के गुण मस्तिष्क के लिए

आपने देखा होगा कुछ लोगों को तीखा खाना बहुत पसंद होता है। बहुत से व्यंजनों में अधिक मिर्च होने पर भी वो इसे खाते रहते हैं। हरी मिर्च मस्तिष्क में एंडोर्फिन का रिसाव करती है। इससे हमारी मनोदशा में सुधार आता है और हम खुश महसूस करते हैं।

हरी मिर्च खाने के फायदे त्वचा के लिए

यदि आप अपनी त्वचा को खूबसूरत बनाना चाहते हैं तो आप अपने खाने में हरी मिर्च खाना शुरू कर दें। हरी मिर्च में विटामिन सी और ए होता है जो त्वचा के स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभदायक है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि आप बहुत सारी मिर्च खाने लगें। आपको हरी मिर्च का संतुलित मात्रा में ही उपयोग करना है, नहीं तो आपके पेट में जलन होने लगेगी। हरी मिर्च में एंटीबैक्टीरियल गुण होते हैं। इसलिए यह त्वचा में होने वाले इन्फेक्शन को भी दूर करती है।

प्रतिरोधक क्षमता के लिए फायदेमंद

जिन लोगों के रोग प्रतिरोधक तंत्र बहुत कमज़ोर होते हैं उन्हें बीमारियां बहुत जल्द अपना शिकार बना लेती हैं। यदि आप अपने आहार में हरी मिर्च को शामिल करते हैं तो इससे आपको विटामिन सी मिलता है और आपकी रोगों से लड़ने की क्षमता बढ़ जाती है। हरी मिर्च में भी नारंगी के समान विटामिन सी होता है जो हड्डियां और दांतों को भी मजबूत बनाता है।

हरी मिर्च के नुकसान

- हरी मिर्च खाने के जैसे बहुत फायदे हैं वैसे ही इसका अधिक मात्रा में सेवन करना हमारे शरीर के लिए हानिकारक है।
- इसमें मौजूद कैप्साइसिन पेट की गर्मी को बढ़ाता है जिससे अनेकों प्रकार की स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां होती हैं।
- हरी मिर्च में अधिक फाइबर होता है। इसकी अधिक मात्रा से डायरिया हो सकता है। इसमें मौजूद कैप्साइसिन से मेटाबोलिज़्म बैलेंस नहीं रहता और मेटाबोलिज़्म की प्रोसेस कम होती है।
- इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट अल्सर की संभावना को बढ़ा सकते हैं। हरी मिर्च के अधिक सेवन से पेट में जलन और चक्कर की समस्या भी हो सकती है।
- हरी मिर्च के अधिक सेवन से मधुमेह सामान्य से भी नीचे हो जाता है। अतः मधुमेह रोगी जो मधुमेह की दवा ले रहे हैं वह लोग हरी मिर्च का अधिक सेवन नहीं करें।
- हरी मिर्च में कैप्साइसिन होता है। इसके अधिक सेवन से आप को त्वचा संबंधित एलर्जी हो सकती है।
- हरी मिर्च अधिक मात्रा में कैप्साइसिन होने के कारण बवासीर से पीड़ित व्यक्ति इसका अधिक मात्रा में सेवन नहीं करें। नहीं तो आप को बवासीर में और दिक्कतें आने लगेंगी।

खुशखबरी

आ गई शिव संदेश,राजयोग कॉमेन्ट्री की नयी कुंजी...

हम सभी जितने भी जिज्ञासु या आगंतुकों से मिलते हैं तो उस समय होता है कि कुछ इनको परमात्मा के बारे में बताया जाये,तो वैसे तो हम बताते ही हैं लेकिन उसके साथ-साथ कुछ लिखित सामग्री अगर दी जाये तो उसको पढ़कर उनके अंदर उसे जानने की जिज्ञासा और बढ़ जायेगी। इसी ध्येय को लेते हुए हमने 'परमपिता परमात्मा शिव का संदेश' और परमात्मा से सहज योग के लिए 'राजयोग मेडिटेशन कॉमेन्ट्री' की एक ज़ेबी किताब या पॉकेट बुक डिज़ाइन किया है जो बहुत ही कारगर है। जिसमें परमात्मा का पूरा संदेश और उनसे मिलन मनाने की सहज विधि के लिए अभ्यास करने की कॉमेन्ट्री भी है। आप इसे ओमशान्ति मीडिया,शांतिवन से प्राप्त कर सकते हैं।

ओमशान्ति मीडिया,ब्रह्माकुमारीज़,
आनंद भवन,शांतिवन,आबू रोड(राज.-307510)
मो.- 9414154344, 9414006096, 9414182088
ई.मेल - omshantimedia.bkivv.org

भोपाल-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ के गुलमोहर कॉलोनी सेवाकेंद्र द्वारा बंगरसिया भोपाल स्थित रैपिड एक्शन फोर्स(आर.ए.एफ.) की 107वीं वाहिनी में आयोजित रक्षाबंधन कार्यक्रम में सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. डॉ. रीना दीदी ने सेकंड इन कमांडेंट मनीष महाले तथा अन्य सभी अधिकारियों एवं जवानों को रक्षासूत्र बांधकर तनाव मुक्त एवं नशा मुक्त रहने की प्रतिज्ञा कराई। ब्र.कु. राघेन्द्र भाई ने सभी को कठिन कार्यशैली के बीच कार्यक्षेत्र एवं परिवार में खुशहाल रहकर कार्य करने हेतु प्रशिक्षण दिया।

सैलाना-म.प्र.। सैलाना थाना के पुलिस कर्मियों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में उपस्थित हैं स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. रजनी दीदी, थानेदार अनिल मर्सकोले, राजेंद्र प्रसाद, शिवजी यादव तथा अन्य पुलिसकर्मी।

छतरपुर-म.प्र.। राज की दुनिया के संपादक प्रेम गुप्ता को राखी बांधने के पश्चात ईश्वरीय प्रसाद व राखी पैम्फलेट भेंट करते हुए ब्र.कु. रीना बहन एवं ब्र.कु. सुमन बहन।

हमें वो करना है जो हमारे और दूसरों के लिए सही है

किसी भी समस्या का समाधान बाहर नहीं... अपने भीतर ढूंढें

- गतांक से आगे...

पिछले अंक में आपने पढ़ा कि अगर घर के सारे लोग उस बात के बारे में सोचना बंद करते हैं तो उसके साथ हुआ जो कुछ धीरे-धीरे वो भी भूल जायेगा। बोलना भी बंद करना है, साथ-साथ सोचना भी बंद करना है। अभी उस बात पर फुल स्टॉप लगाओ, उस टॉपिक पर बात नहीं करो। बहुत हो चुका। प्रॉब्लम को छोड़ सॉल्यूशन की तरफ चलें।

अब ये होना चाहिए कि अब मेरी थॉट किस डायरेक्शन में चलनी चाहिए। इसको कहेंगे समाधान की तरफ चलना। समस्या के बारे में... ज़्यादातर हमारी बातचीत किसके बारे में होती है? और जो समाधान है, कोई भी समस्या का समाधान बाहर नहीं होता है पहले। इसलिए समाधान को बाहर नहीं ढूंढना। आप ये करोगे तो ठीक हो जायेगा, आप ये बोलोगे तो ठीक हो जायेगा। आप उनको जाकर ये कहो। कुछ नहीं ठीक होगा क्योंकि अभी अन्दर पहले ठीक नहीं किया है, और जब तक अन्दर नहीं ठीक किया तो आप बाहर कितना भी कोशिश करो ठीक करने का, एनर्जी कौन-सी जा रही है? तो कोई भी प्रॉब्लम में पहला स्टैप सॉल्यूशन।

मुझे अपनी सोच को इस टाइम चेक करना है। अगर बेटी घर आकर बोल रही है कि ये-ये इन्होंने किया, ऐसा-ऐसा हुआ लेकिन वो भी उनके बारे में कैसा सोच रही है अभी? वो रिश्ता नहीं जुड़ सकता। ठीक है उन्होंने ऐसा किया, बस अभी समझ में आ गया कि उन्होंने क्या किया। बहुत ज़्यादा नहीं एक्सप्लेनेशन चाहिए। अब क्या करना है? लेकिन जो दर्द में आता है ना ये रिस्की बहुत है। जो दर्द में आता है ना वो क्या चाहता है कि वो सबको अपना दर्द सुनाये। दर्द बांटना नहीं कभी किसी का भी। हम ये शब्द यूज़ क्यों करें? हम अपना दर्द बांटें, बांटें मतलब? मेरा हाफ आप ले लो। आप मेरा दर्द बांटो इससे मैं क्यों न आपकी स्टेबिलिटी बांट लूं। दर्द बांट रहे हैं बैठ के सारा दिन। इसलिए अगर कोई भी अपनी वो बातें आके सुनाता जाये, सुनाता जाये उसको पाँच-दस मिनट से ज़्यादा नहीं देना सुनाने के लिए। क्योंकि बातें वो ही होती हैं सारी। फिर वो आये, फिर उन्होंने ये कहा, फिर वो बैठे, फिर उसने ऐसा बोला... और कुछ नहीं निकलेगा

उसमें से, आप गोल-गोल घूमते जायेंगे। और फाइनली वो सारा सुनने के बाद आप कहते हैं ओके। अब, अब क्या सोचना है? ये आप चूज़ करेंगे कि कितनी देर वो कन्वर्सेशन सुननी है।

जो अपना दर्द सुनाने आता है मालूम है वो क्यों सुनाता है? क्यों लोग सुनाते हैं अपनी प्रॉब्लम औरों को? क्योंकि वे अप्रूवल चाहते हैं कि हाँ बच्चे मुझे समझ में आ गया कि तेरे सास-ससुर तो सच में बहुत खराब हैं। हैं ना? देखो मैं बोल रही थी ना कि वे ऐसे हैं। उस समय हमने उस बच्चे का नुकसान कर दिया। हमारे सामने जैसे भाई-बहनें आते हैं ना अपनी प्रॉब्लम लेकर तो वे सिर्फ अप्रूवल चाहते हैं। हाँ-हाँ आपके साथ ऐसा हुआ, उनके साथ ऐसा करना चाहिए, क्योंकि वे कहते हैं कि कोई सॉल्यूशन दो ना मेरे हस्बैंड कैसे चेंज हों, कोई सॉल्यूशन दो ना मेरा फलां, फलां कैसे चेंज हो। अगर फलां-फलां को चेंज करना है तो फिर उनको लेकर आना था। उनको तो लेकर नहीं आते, मेरे को सॉल्यूशन दे दो ताकि वो चेंज हो जाये। अब स्पिरिचुअलिटी तो यही सॉल्यूशन देगा कि उनको तो चेंज करना नहीं है।

तो फिर हम उनसे बात करते हैं कि क्या आप जानते हैं कि आपको ऐसा-ऐसा चेंज करना है? वे हमें पसंद नहीं करते। कहते कि आप कैसे लोग हो, प्रॉब्लम मुझे हो रही है, तंग वो कर रहे हैं, और आप कहते हैं कि मुझे चेंज करना होगा, रॉन्ग। आप सही व्यक्ति नहीं हैं। क्योंकि उस समय वो किसलिए आए थे, सिर्फ अप्रूवल। हरेक जो दर्द में है उसको सिर्फ और सिर्फ अप्रूवल चाहिए कि मेरा दर्द जस्टिफाइड है। अगर आप उनके शुभचिंतक हैं तो चाहे बात कितनी भी बड़ी हो, बात जस्टिफाइड है, आपका दर्द जस्टिफाइड नहीं है। तो कभी भी उनके दर्द को जस्टिफाइ नहीं करना। क्योंकि जैसे ही आपने किसी के दर्द को जस्टिफाइ कर दिया, उसको अप्रूव कर दिया अब वो बिल्कुल कोशिश नहीं करेगा उससे बाहर निकलने का। क्योंकि उसे पब्लिक अप्रूवल मिल चुका है कि मैं सही हूँ। अगर हम उनके फैमिली हैं तो हमारा रोल है कि हाँ-हाँ ठीक है उन्होंने किया लेकिन आपको उनके बारे में अब कैसा सोचना है ताकि ये रिश्ता ठीक हो जाये। और अपना फोकस हमेशा उनकी विकनेस से हटाकर उनकी स्ट्रेंथ पर ले जाओ।

भैंसदेही-बैतूल(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के नए सेवाकेंद्र का फीता काटकर उद्घाटन करते हुए केन्द्रीय राज्य मंत्री डी.डी. उइके। इस मौके पर सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मंजू दीदी, ब्र.कु. सुनीता दीदी, विधायक एवं नगर के कई गणमान्य नागरिक मौजूद रहे।

बार्शी-महा.। धाराशिव निर्वाचन क्षेत्र के सांसद ओमराजे निंबाळकर को राखी बांधते हुए ब्र.कु. संगीता बहन। साथ हैं ब्र.कु. मीरा बहन व ब्र.कु. निशा बहन।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली -02 (2024)

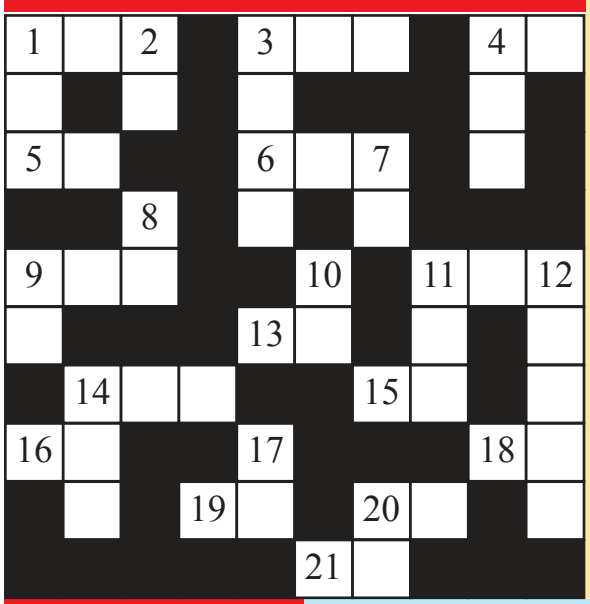

सूचना

बहुत समय से पहेली व सुडुको अथवा पज़्ज़ल में रुचि रखने वाले भाई-बहनों की मांग थी कि ओमशान्ति मीडिया में पहेली का कॉलम डाला जाये। पहले हमने काफी वर्षों तक उसे चलाया था। किंतु कोरोना काल के बाद उसे बंद कर दिया गया था। अब आप सब की रुचि को देखते हुए फिर से आपके लिए पुनः इसकी शुरुआत कर रहे हैं। यह पहेली परमात्मा के महावाक्य व अव्यक्त मुरलियों के आधार पर है। जिससे आपके ज्ञान में वृद्धि होगी और खास करके मुरलियों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी और परमात्म स्मृतियों को तरोताज़ा करेगी। जिससे आपकी मनन शक्ति और तीक्ष्ण व तेज़ होगी। आशा करते हैं कि आपको ये पसंद आयेगी।

हरेक पहेली का दूसरे अंक में उत्तर दिया जायेगा मुरली की तारीख सहित। जिससे आप चेक कर सकेंगे कि आपने जो उत्तर दिया है वह ठीक है या नहीं। फिर उसे आप अपने आप में नम्बर देंगे। ऐसे वर्ष भर यानि कि सितम्बर 2024 से अगस्त 2025 तक रहेगा।

ऊपर से नीचे

1. ऐ ..... तेरे बन्दे हम.. ऐसे हो हमारे करम.. नेकी पर चले और बदी से ले.. ताकि हँसते हुए निकले दम..(3)
2. गीता में शरीर को ..... की उपमा देते हुए कहा गया है कि इन्द्रियां इसके घोड़े हैं, मन सारथी और आत्मा स्वामी है।(2)
3. आत्मा ..... है, शरीर विनाशी है।(4)
4. ..... रूप रचकर.. देह का भान तजकर, चले है पार गगन.. निराले अपने वतन(3)
7. ऋण, उधार देना(2)
8. डर, खौफ(2)
9. स्व-परिवर्तन से ..... परिवर्तन करना है।(3)
10. स्वर्ण, कंचन (2)
11. जब कहते ही हो, बाप ही मेरा ..... है। तो बुद्धि कहीं जा नहीं सकती। (3)
12. पवित्रता का त्यौहार, भाई-बहन के प्यार का त्यौहार(5)
14. बड़ों का ..... करना चाहिए। (3)
17. डबल फारेनर्स में से ऐसे रत्न निकलेंगे जो ..... सो फास्ट की लिस्ट में आयेंगे।(2)
20. पूज्य बनने में भी आप आत्माओं जैसी ..... और किसी भी धर्म के आत्माओं की नहीं होती।(2)

बायें से दायें

1. गुरू, अध्यापक, टीचर(3)
3. आत्मा का ..... स्वरूप निराकार है।(2)
4. सब्र का ..... मीठा होता है।(2)
5. ..... करना आवश्यक है, लेकिन फल की इच्छा नहीं रखनी चाहिए।(2)
6. वर्ल्ड ड्रामा एक ऐसा ..... है जिसे सभी आत्माएं पृथ्वी ग्रह पर अवतरित होकर खेलती हैं।(3)
9. मैं कल्प-कल्प की ..... आत्मा हूँ।
11. ब्राह्मणों के जीवन में मैजारिटी विघ्न रूप बनता है- .....। चाहे अपना ....., चाहे दूसरों का .....(3)
13. जो स्वयं को ..... कर सकता है, वो रियल गोल्ड हैं।(2)
14. ..... का इंतजार नहीं करो, इंतजाम करो।(3)
15. गायन है ..... से देवता किये करत न लागी बार..(2)
16. मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती को प्यार से बच्चे क्या कह कर बुलाते थे।(2)
18. श्रीराम जी ने रावण का ..... किया।(2)
19. लास्ट में आते भी ..... पुरूषार्थ कर फर्स्ट आ सकते हैं।(2)
20. पाँच स्वरूप में तीसरा स्वरूप क्या हैं।(2)
21. जो स्वयं का जज बनता है वही धर्मराजपूरी की ..... से बच जाता हैं।(2)

FOR ONLINE TRANSFER

Pay Directly to: osmorerf@indianbk

BANK NAME:- INDIAN BANK
BRANCH:- Shantivan,Talhati
ACCOUNT :- OM SHANTI MEDIA OF RERF
ACCOUNT NO:- 7552337300,
IFSC - CODE:- IDIB000S319

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
E-Mail - omshantimedia@bkivv.org

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़,शान्तिवन,तलहटी,
पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510
संपर्क- M- 9414006096, 9414154344, 9414182088
Email-omshantimedia@bkivv.org
सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - ₹-240, तीन वर्ष - ₹- 720, आजीवन - ₹- 6000
Website: www.omshantimedia.org

मुम्बई-नेपियन सी रोड। स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. रुक्मिणि बहन, ब्र.कु. निहा बहन तथा अन्य ब्र.कु. भाई-बहनों एवं विशिष्ट लोगों ने मिलकर महाराष्ट्र के नए राज्यपाल सी.पी. राधाकृष्णन का राजभवन मुम्बई में गुलदस्ता व ईश्वरीय सौगात भेंट कर स्वागत किया।

रीवा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ एवं फॉरेस्ट विभाग रीवा के सहयोग से सैनिक स्कूल में आयोजित 'एक पेड़ माँ के नाम एवं नशा मुक्ति शपथ ग्रहण' कार्यक्रम में सैनिक स्कूल के प्राचार्य कर्नल अविनाश रावल, श्रीमती नेहा रावल,सैनिक स्कूल प्रथम महिला, ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय निदेशिका राजयोगिनी ब्र.कु. निर्मला दीदी, वरिष्ठ राजयोगी ब्र.कु. प्रकाश भाई, ब्र.कु. नम्रता बहन, सैनिक स्कूल के प्रबंधकारणी समिति के अध्यक्ष व पूर्व रायपुर जनपद अध्यक्ष लाल बहादुर सिंह, पूर्व मध्यांचल ग्रामीण बैंक की मैनेजर शिखा चिकटे, एडवोकेट सुरेश, आमोद शर्मा शिक्षक, डॉ. राकेश, समर शिक्षक, पी.के. पोलाई क्वार्टर मास्टर, रजनीश यादव, सुधान जेई एवं ऑल स्टूडेंट ग्राउंड स्टाफ सपोर्टिंग सहित अन्य भाई-बहनें शामिल रहे।

इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। राजन अग्रवाल,अधीक्षण अभियंता,केंद्रीय लोक निर्माण विभाग को राखी बांधते हुए ब्र.कु. विका बहन। साथ हैं ब्र.कु. नारायण भाई।

जबलपुर-नेपियर टाउन(म.प्र.)। ब्रह्माकुमारीज़ के शिव स्मृति भवन सेवाकेंद्र द्वारा अंतर्राष्ट्रीय युवा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम के दौरान जबलपुर के उत्तर मध्य क्षेत्र के विधायक अभिलाष पांडे को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. भावना दीदी। साथ हैं डॉ. श्याम रावत,कैंसर रोग विशेषज्ञ।

छतरपुर-म.प्र.। नवभारत संपादक राधे यादव एवं जनपथ दर्शन केशव शर्मा को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. रीना बहन।

कथा सरिता

पुतले की कीमत

एक राजा को नए-नए खिलौने खरीदने का बहुत शौक था। समय-समय पर उसके दरबार में व्यापारी नए-नए खिलौने बेचने आते थे। एक दिन दरबार में एक व्यक्ति आया और उसने कहा कि राजन, आज मैं आपको जो खिलौने दिखाने वाला हूँ, वैसे खिलौने आपने कभी देखे नहीं होंगे।

ये सुनकर राजा बहुत उत्सुक हो गया। उसने कहा दिखाओ अपने खिलौने। व्यापारी ने अपने झोले से तीन पुतले निकाले। उसने कहा ये तीनों दिखने में तो एक जैसे हैं लेकिन पहले पुतले की कीमत एक लाख मोहरें, दूसरे की कीमत एक हज़ार मोहरें और तीसरे की कीमत एक मोहर है।

तीनों एक जैसे पुतलों की कीमत में इतना अंतर देखकर राजा ने सभी पुतलों को उठाकर देखा। तीनों पुतले एक जैसे ही थे। सभी दरबारी भी तीनों पुतलों का भेद समझ नहीं सके। तब राजा ने अपने बुद्धिमान मंत्री से कहा कि कृपया इन पुतलों का भेद बताएं।

मंत्री ने तीनों पुतलों को बहुत ध्यान से देखा और एक सेवक से कुछ तिनके मंगवाए। मंत्री ने पहले पुतले के कान में एक तिनका डाला तो वह सीधे पेट में चला गया। कुछ देर बार उसके होंठ हिलने लगे और बंद हो गए। दूसरे पुतले के कान में तिनका डाला तो वह तिनका दूसरे कान से बाहर निकल गया। तीसरे पुतले के कान में तिनका डाला तो उसका मुंह खुल गया और ज़ोर-ज़ोर से हिलने लगा।

मंत्री ने राजा और दरबारियों से कहा कि ये पुतले हमें बहुत बड़ी सीख दे रहे हैं। पहला पुतला उन लोगों की तरह है जो दूसरों की बात को सुनकर समझते हैं, उसकी सच्चाई मालूम करते हैं उसके बाद ही कुछ बोलते हैं। इसीलिए इसकी कीमत सबसे ज़्यादा है।

दूसरा पुतला बता रहा है कि कुछ एक कान से बात सुनते हैं और दूसरे से निकाल देते हैं। ऐसे लोगों को किसी से कोई मतलब नहीं रहता है। ये अपनी मस्ती में ही मस्त रहते हैं।

तीसरा पुतला उन लोगों की तरह है जो किसी भी बात की सच्चाई मालूम किए बिना ही ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगते हैं और सभी को बताने लगते हैं। इन लोगों के पेट में कोई बात टिकती नहीं है। इस तरह के लोगों से सावधान रहना चाहिए। इसीलिए इसकी कीमत सिर्फ एक मोहर है।

बीदर-कर्नाटक। डिप्टी कमिश्नर श्रीमती शिल्पा शर्मा,आईएएस को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. सुमंगला दीदी, राजयोगिनी ब्र.कु. सुनंदा दीदी तथा अन्य।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। कलेक्टर राजेश बाथम को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी। साथ हैं ब्र.कु. गीता दीदी, समाजसेवी राजेंद्र पोरवाल तथा अन्य।

नामली-म.प्र.। बॉर्डर पर देश की रक्षा करने वाले सैनिक संगठन नामली के सैनिक नायक कैलाश माली, नायक दीपक चौहान, नायक संजय शिंदे एवं नायक सुरेश मालवीय को राखी बांधने एवं ईश्वरीय सौगात भेंट करने के पश्चात् उपस्थित हैं सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. संगीता बहन।

औरंगाबाद-महा.। ब्रह्माकुमारीज़ के एन.2 सिडको शाखा द्वारा सिडको एन.2 महालक्ष्मी चौक में शिक्षकों के लिए आयोजित 'भावनात्मक बुद्धिमत्ता और आत्म-जागरुकता के माध्यम से तनाव प्रबंधन' विषयक कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ छत्रपति संभाजीनगर की मुख्य संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. शीला दीदी, मुख्य वक्ता ब्र.कु. मनोज कोतवाल, भाऊ साहेब तुपे, डॉ. अशोक तेजनकर, स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. शांता दीदी व अन्य भाई-बहनों सहित 200 शिक्षक शामिल रहे।

दस सिर वाला कौन... रावण!

किसी बच्चे से अगर ये पूछें कि दस सिर वाला कौन? तो तुरंत ही उत्तर दे देगा। आप भी जानते हैं ये। लेकिन क्या ऐसे मनुष्य का जन्म हुआ होगा! अगर हाँ, तो क्या आज उसका कोई प्रमाण है! ज़रा सोचिए दस सिर वाले मनुष्य का जन्म माँ के गर्भ से कैसे होगा? संभव ही नहीं। लेकिन फिर भी हर साल हम उसको जलाते हैं, हर साल उसका बुत बड़ा करके जलाते हैं। लेकिन दशकों से जलाते आने पर भी वो आज भी मरा नहीं बल्कि और ही बड़ा होता जा रहा है। तो आइए जानें... वो कौन है और कहाँ है... ये ढूंढने पर ही हम उसे हरा भी सकेंगे और जला भी सकेंगे।

रामनवमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, शिवरात्रि आदि त्योहार श्रीराम, श्रीकृष्ण और भगवान शिव के पुनीत नामों को लिए हुए है। परंतु दशहरा और विजयदशमी त्योहार के नाम में 'राम या रावण' का नाम न होकर 'दश' शब्द पर अधिक ज़ोर है। इसका कोई कारण तो होगा ही। आज अधिकतर लोग इस 'दश' शब्द के महत्व के बारे में जानते हैं कि रावण के दस शीष थे। इसलिए रावण के वध से सम्बंधित त्योहार का नाम 'दशहरा' है। परंतु क्या आपकी अंतरात्मा यह गवाही देती है कि रावण के दस मुख थे! दस मुख वाला कोई व्यक्ति माता के गर्भ से जन्म ही कैसे ले सकता है! या जन्म लेकर इतने काल तक कैसे ज़िन्दा रह सकता है! दस मुख वाला एक विशालकाय व्यक्ति तो लोगों के लिए सदा एक अजायबघर अथवा चिड़ियाघर की चीज़ अथवा एक डरावना हौआ ही बना रहता होगा। फिर उसकी हत्या को रावण हत्या या रावण वध न कहकर 'दश-हरा'(दशहरा) ही क्यों कहा गया?

क्या ऐसा भी कोई मनुष्य हो सकता है!

यदि रावण दस मुख वाला व्यक्ति था तो भला वो खाता किस मुख से होगा, वो बात किस मुख से करता होगा, क्या उसके बीस कान होंगे, या कान केवल दो ही रहे होंगे? वो किन कानों से सुनता होगा, किन आँखों से एक व्यक्ति विशेष की ओर देखता होगा और सोचता किस मस्तिष्क से होगा? अगर आज भी हम कोई जुड़वा बच्चा देखते हैं तो न केवल उसके दो मुख होते हैं बल्कि वे दो ही व्यक्ति होते हैं। उनके सोच-विचार भी अलग-अलग होते हैं। तब दस सिर परंतु एक धड़ अथवा एक शरीर वाला व्यक्ति भला एक ही मन वाला कैसे होगा! क्या उसके शेष 9 मस्तिष्क, 18 आँखें बेकार रहे होंगे? ऐसे प्रश्नों पर विचार करने पर कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति इस बात पर निश्चय ही नहीं कर सकता कि कभी लंका का कोई राजा दस मुख वाला व्यक्ति था। न ही आज लंका के लोग अपने इतिहास में कोई ऐसा व्यक्ति हुआ मानते हैं।

'रावण' रुलाने वाला... दुःख देने वाला

तब प्रश्न उठता है कि रावण को 'दशानन' कहा गया है, इसका कोई तो आधार होगा ही। दशानन कहने का कारण तो कोई ज़रूर है। परंतु वह तभी समझ में आ सकता है जब रावण को कोई हड्डी-मांस वाला व्यक्ति न मानकर, कोई व्यक्ति वाचक नाम न मानकर हम इस शब्द के आध्यात्मिक अर्थ पर विचार करें अर्थात् 'रावण' शब्द का 'रुलाने वाला' ऐसा जो अर्थ है उसको ध्यान में रखते हुए रावण शब्द को माया का वाचक मानें क्योंकि 'माया' अथवा मनोविकार ही आत्मा को दुःख दिलाने तथा रुलाने का कारण बनते हैं।

दस शीष का आध्यात्मिक अर्थ

गीता में भगवान के महावाक्य हैं कि हे वत्स, काम, क्रोध और लोभ नर्क के द्वार हैं। अब यदि इस वाक्य के शब्दार्थ को लेकर कोई यह मान ले कि नर्क किसी बिल्डिंग अथवा नगर का नाम है और काम, क्रोध आदि सचमुच उसके कोई द्वार अथवा फाटक ही हैं तो यह उसकी भूल होगी। क्योंकि वास्तव में काम, क्रोधादि कोई लोहे व लकड़ी के द्वार नहीं हैं बल्कि यहां 'द्वार' अर्थात् रूलाने वाली माया के दस 'मुख'। कहने का भाव है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, छल, हठ और आलस्य। ये दस माया के मुख्य रूप हैं। रावण के दस मुख कहने का भाव यही है कि मनुष्य ऊपर बताये दस विकारों में से किसी भी विकार के अधीन होकर बोलता, सुनता, देखता, विचारता या स्मरण करता है तो मानो कि वो रोने का साधन जुटाता है, वह 'असुर' है। क्योंकि गीता के भगवान ने इन विकारों को 'आसुरी लक्षणों' में गिनाया है।

विकारों पर विजय का प्रतीक 'विजयादशमी'

जैसे रावण को 'दशानन' कहते हैं। माना ये दस विकार-समूह अथवा दस रूप वाली माया का प्रतीक है। वैसे ही कुम्भकरण समस्त चेतनाओं की अवहेलना, न सुनने का अथवा अति-निद्रा का वाचक है। मेघनाद, मेघ की गर्जना के समान वचन अर्थात् निरर्थक अथवा भयप्रद बोलने का, स्वभाव की कठोरता, कटुता अथवा क्रूरता, दोषारोपण, मारीच, मिथ्याचार, भ्रान्ति, कुचाल अथवा धोखे का प्रतीक है। इन्हीं अर्थों को लेकर ही मनुष्य राम कथा का वास्तविक अर्थ जान सकता है। और रावण माया पर विजय प्राप्त करके सच्चा दशहरा मना सकता है।

दशहरे के पूर्व नवरात्रि के नौ दिन नवधा-तपस्या द्वारा शिव की शक्ति धारण कर स्वयं में निहित विकारों पर विजय प्राप्त करने के रूप में दशहरा मनाते हैं, जिसको विजयादशमी भी कहते हैं।

धार-म.प्र.। मनोज कुमार सिंह,एसपी को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. सत्या दीदी, ब्र.कु. शीतल बहन, ब्र.कु. अन्नू बहन तथा अन्य।

विदिशा-म.प्र.। ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र ए-33 मुखर्जी नगर की ओर से पुलिस अधीक्षक दीपक शुक्ला,एसपी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रेखा बहन व ब्र.कु. रुक्मणि बहन।

सारंगपुर-म.प्र.। स्थानीय जेल में रक्षाबंधन कार्यक्रम के दौरान कैदियों को व्यसन मुक्ति का संदेश दिया गया। इस मौके पर राज्य मंत्री गौतम टेटवाल, जेलर संजय शर्मा, शासकीय कॉलेज प्राचार्य ममता खोया, प्रीति बहन, स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. भाग्यलक्ष्मी बहन, ब्र.कु. नीरज भाई तथा अन्य लोग उपस्थित रहे।

वर्धा-महा.। नशा मुक्त भारत अभियान व इंडियन रेड क्रॉस सोसायटी द्वारा आयोजित 'समस्या से समाधान की ओर' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए डॉ. सचिन परब,नेशनल कोऑर्डिनेटर,नशामुक्त भारत अभियान, डॉ. सचिन पावड़े,बाल रोग विशेषज्ञ,संस्थापक अध्यक्ष मेडिकल अवेयरनेस फोरम, प्रो. कृष्ण कुमार सिंह,कुलाधिपति महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा, डॉ. स्मिता पावड़े, रमेश कुमार,ज़ोनल मैनेजर बैंक ऑफ इंडिया, अनिल नरेडी,सदस्य लायंस क्लब गांधी सिटी वर्धा, रविजी शेंडे,अध्यक्ष इंदिरा बहुउद्देशीय महिला विकास संस्थान, समीर शेंडे,निर्देशक शाइनिंग स्टार स्कूल वर्धा, शांताराम जी अवचट, स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. माधुरी दीदी तथा अन्य ब्र.कु. बहनें।

नवी मुम्बई-सीबीडी बेलापुर। ब्रह्माकुमारीज़ की ओर से सीआरपीएफ में डीआईजी रविन्द्र सिंग रौतेला, डीआईजी नरेन्द्र पॉल, डीआईजी एस.पी. उपाध्याय तथा सभी जवानों को ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. शीला दीदी, ब्र.कु. मीरा बहन व ब्र.कु. लक्ष्मी बहन।

रूहानियत का आधार

ब्र.कु. अनुज भाई,दिल्ली

हम सभी एक अच्छा एफर्ट करने वाले हैं, पुरूषार्थ करने वाले हैं। और कई बार मन में ये प्रश्न भी आता है कि पुरूषार्थ लम्बे समय से चलता है लेकिन सभी के साथ हमारा वो सम्बन्ध, वो रिश्ता नहीं जुड़ता या जुड़ पाता है जैसा हम चाहते हैं। तो जैसे ऋषि-मुनि बहुत दूर जंगलों में रहते थे। लेकिन वो दूर से रहते हुए भी सबसे बड़े आराम से जुड़े होते थे। कैसे जुड़े होते थे? कहते थे कि उनकी तरंगे, उनका एक-एक वायब्रेशन हमारे पास पहुंचता है ऐसा सबको अनुभव होता था। तो उन्होंने सिर्फ ब्रह्मचर्य व्रत को धारण नहीं किया साथ ही साथ अपने मन का शुद्धिकरण भी किया, तपस्या की।

ये कई बार का आपका अनुभव होगा, दिखाते भी हैं कि उनके सामने बहुत सारे हिसंक पशु भी बड़े आराम से आकर बैठ जाते थे। क्योंकि उनके मन के अन्दर उनके मन के भावों में सबके प्रेम था, करूणा थी, दया थी। तो जो एक सम्पूर्ण पवित्रता की डेफिनेशन दी जाती है, सम्पूर्ण पवित्रता की परिभाषा सबको सिखाई जाती है उसमें एक चीज़ शामिल होनी ही चाहिए कि क्या सच में मेरे अन्दर के भाव सभी के लिए समान हैं, सभी के लिए बराबर हैं! क्योंकि जब सभी के समान और बराबर होगा तो हरेक आत्मा, हरेक रूह हमसे रूहानियत फील करेगी। तो रूहानियत का आधार हम सबके अन्दर, वो है पवित्रता। उसका बीज है पवित्रता। पवित्रता को सिर्फ शरीर के साथ जोड़ना वो सिर्फ एक संयम का नाम है। लेकिन पवित्रता का गहरा उदाहरण उसके मन के भावों के साथ जुड़ा हुआ है। जैसे परमात्मा हम सबको रोज़ सिखाते हैं कि हम सभी संकल्प और स्वप्न में भी किसी के साथ कोई ऊपर-नीचे का व्यवहार न करें। मतलब कर्म से ब्रह्मचारी, संकल्प से भी ब्रह्मचारी।

अब यहाँ पर ब्रह्मचारी शब्द सही रूप से उस बात की व्याख्या नहीं कर पाता लेकिन इसको परमात्मा दूसरे शब्द में कहते हैं कि जो हम सबके आइडल हैं जिसको हम प्रजापिता ब्रह्मा बाबा कहते हैं, उनके आचरण पर चलना, ब्रह्माचारी होकर रहना ये ब्रह्मचर्य है। हम सबके जीवन का जो आधार होगा वही आधार तो हमको आगे बढ़ायेगा ना! इसीलिए हम सबका जो सम्पर्क है सबसे, वो अलग-अलग है। किसी से परसेन्टेज वाइज बहुत अच्छा है। किसी से परसेन्टेज वाइज बहुत कम है। जैसे किसी के साथ मेरा सौ प्रतिशत गहरा रिश्ता है, किसी के साथ 85 प्रतिशत, किसी के साथ 75 प्रतिशत है। तो उसका आधार क्या है? तो जितना ज़्यादा हमारे अन्दर एक प्रतिशत बाल के बराबर भी अगर कोई ऐसे भाव न हों तब वो व्यक्ति सम्पूर्ण वायब्रेशन, सम्पूर्ण तरंगें हमसे कैच कर सकता है। और आपको बताते हुए अच्छा भी लगता है इन सभी बातों को कि जब हम सभी ये चीज़ें कर रहे होते हैं ना तो धीरे-धीरे हमारे अन्दर की शांति बढ़नी शुरू हो जाती है। अन्दर की शांति का जो आधार है वो भी रूहानियत ही है। वो भी अन्दर के भाव की सच्ची पवित्रता ही है। एक दिन की बात नहीं है ये लगातार करने की बात है।

हम दूर बैठें भी इन बातों से दुआयें कमा सकते हैं। आपको कहीं-कहीं जंगल में नहीं जाना है, किसी के पास नहीं जाना, सिर्फ रूहानियत, सिर्फ अपने भाव बदलने हैं। उसका आधार है, तन, मन से सम्पूर्ण पवित्र। तो मन की पवित्रता ही आज थोड़ी-सी कम है, इसीलिए आज हमारे सम्बन्ध सभी से चाहे डायरेक्टली, चाहे इनडायरेक्टली, चाहे प्रत्यक्ष, चाहे अप्रत्यक्ष, से सही रूप से नहीं जुड़ पा रहे। इसीलिए जो दुआ का खाता है हमारा, जो दुआयें चाहिए उन दुआओं के लिए हमें अलग से प्रयास करना पड़ता है। जैसे हम कभी योग में बैठें तो चलो बहुत अच्छी बात है। बहुत अच्छा अनुभव हो वो भी बहुत अच्छी बात है, लेकिन नैचुरल हो जाये वो हमारे लिए, उससे अच्छा कुछ है ही नहीं। इसलिए सबसे पहले है एक परमात्मा के साथ जो हमारा सम्बन्ध है, सम्बन्ध को आप ऐसे समझ सकते हैं कि कोई भी सम्बन्ध जब हम उसकी तलाश कर रहे थे तो आप सबके अन्दर भी होता है ना कि कोई ऐसा सम्बन्ध हो जिससे मैं बात कहूँ, या कोई बात करूं तो सिर्फ उसी के पास रहे और कहीं न जाये। वो विश्वास, वो अन्दर का भाव, वो रिश्ता हम चाहते हैं और वो सिर्फ परमात्मा के साथ ही हो सकता है। इसलिए परमात्मा हमेशा एक बात कहते हैं कि अगर तुम एकाग्र होकर एक के साथ सम्बन्ध जोड़ो तो तुम्हारी रूहानियत बढ़ेगी। और सिर्फ परमात्मा के जुड़ने से ही बढ़ेगी। और वो पवित्रता जो होगी वो परमानेंट होगी। उससे जो आपका सम्बन्ध किसी से भी जुड़ेगा वो हमेशा से रहेगा, जुड़ेगा। उसमें कोई स्वार्थ नहीं होगा, वो निःस्वार्थ भाव वाला होगा। और सब उसको एप्रीशिएट भी करेंगे और सब उसको एन्जॉय भी करेंगे। तो चलो आज इस रूहानियत को बढ़ाते हैं और सम्पूर्ण पवित्रता को समझकर उसको धारण करते हैं।

परमात्मा हमेशा एक बात कहते हैं कि अगर तुम एकाग्र होकर एक के साथ सम्बन्ध जोड़ो तो तुम्हारी रूहानियत बढ़ेगी। और सिर्फ परमात्मा के जुड़ने से ही बढ़ेगी। और वो पवित्रता जो होगी वो परमानेंट होगी।

मन की बातें

\- राजयोगी ब्र.कु. सूरज भाई

प्रश्न : मेरा नाम रामनारायण नेमा है। मैं बरेली से हूँ। गीता का भगवान आप लोग हमेशा जब दिखाते हैं तो ये दिखाते हैं कि गीता ज्ञान दाता परमात्म शिव हैं, श्रीकृष्ण नहीं हैं। श्रीकृष्ण तो उनकी रचना हैं। क्या आप इस बात को थोड़ा स्पष्ट कर सकते हैं, इतनी बड़ी बात आप लोग कैसे कहते हैं?

उत्तर : प्राचीनकाल से, लम्बेकाल से ये मान्यता रही है कि बिल्कुल ये पौराणिकता है कि महाभारत के युद्ध में अर्जुन जब मोह ग्रस्त हो गये तो उनको श्रीकृष्ण ने गीता का ज्ञान दिया और वो ही गीता का ज्ञान आजतक प्रचलित है। यद्धपि आज गीता को पढ़ने वाले नाममात्र के लोग रहे हैं। विद्यार्थियों से जब पूछा जाता है कि गीता ज्ञान किसने दिया तो एक-दूसरे को देखने लगते हैं कि गीता क्या बला है! तो आज तो स्थिति कुछ अधिक नीचे उतर चुकी है कि गीता पुस्तिका जो कभी 25 पैसे की मिलती थी अब भी बहुत सस्ती मिलती है। वो किसी के घरों में नहीं होती है। लोग ये मानते हैं कि गीता अगर बच्चों ने पढ़ ली तो वो सन्यासी बन जायेंगे। लेकिन गीता एक बहुत सुन्दर शास्त्र है। बहुत ही गुह्य फिलॉसफी लिए हुए है। इसलिए इसको सर्वशास्त्र शिरोमणि भगवत गीता भी कहते हैं। क्योंकि सर्व शास्त्रों का सार है इसमें कि तुम कौन हो और मैं कौन हूँ। दोनों चीज़ें हैं इसमें कि तुम अब अपने को आत्मा निश्चय करके मेरे से बुद्धियोग कैसे जोड़ो। निष्काम कर्म कैसे करो। त्याग, सन्यास सबकी गुह्य व्याख्यायें हैं समर्पणता आदि की।

जो भी अध्यात्म के मूल सूत्र हैं वो सब श्रीमद्भगवत् गीता में बहुत सुन्दरता से चर्चित किए गए हैं। लेकिन समय के अंतराल में लोग इसको भूलते गए और लोगों ने इसे सन्यास का शास्त्र समझ लिया। लेकिन वास्तव में ये सभी गृहस्थियों के लिए है। और बहुत सुन्दर इसमें सीख है। आजतक तो हम यही मानते आ रहे थे लेकिन अब जब भगवान इस धरा पर आये तो उन्होंने ये बात स्पष्ट की कि ज्ञान का सागर एक मैं हूँ निराकार परमात्मा। मैंने ही कल्प के आदि में सत्य गीता ज्ञान दिया था परंतु द्वापरयुग से मुझे सब भूल गये, निराकार की कोई स्मृति नहीं रही। तो जो साकार देवता है, जो सर्वश्रेष्ठ है, जिसे नेक्स्ट टू गॉड कहते हैं, तो लोगों ने देखा कि गीता ज्ञान बहुत सुन्दर है इसका राइटर तो कोई है नहीं, दिख नहीं रहा तो श्रीकृष्ण को उससे जोड़ा, कि श्रीकृष्ण ने युद्ध के मैदान में इस तरह गीता ज्ञान दिया। तो हम लोग उसी आधार पर ये बात कहते हैं कि परमात्मा जो निराकार है वही ज्ञान का सागर है। उसने ही गीता ज्ञान दिया था। बाद में गीता ज्ञान में कई मिलावटें होती रहीं। सोचने की बात है, मैं आप सभी को ज़रा-सा चिंतन देना चाहता हूँ। पहला तो ये कि युद्ध के कोलाहल में इतना सुन्दर ज्ञान देने का वातावरण होता है, जब चारों ओर सेनायें तैयार हों लड़ने के लिए? बस शंख बजने ही वाले हों और लोगों के मन भी उसी तरह की स्थिति में आ गये हों? ज्ञान देने के लिए तो बहुत पीसफुल जगह चाहिए। वो भी गीता जैसा ज्ञान जिसको सुनने वाला भी बहुत योग्य पात्र हो, इस पर विचार करें।

प्रश्न : उस समय जैसे कहा जाता है कि भगवान ने समय को रोक दिया था। और सभी लोग शांति से खड़े हुए थे और युद्ध का कोलाहल उस समय नहीं था। क्या उस समय सम्भावना नहीं थी कि ज्ञान दे दिया जाये?

उत्तर : भगवान के बारे में तो लोग कुछ भी कह सकते हैं कि समय को रोक दिया था। वो युद्ध को भी रोक सकते थे। फिर तो इन सब चीज़ों की ज़रूरत ही नहीं थी। समय ऐसी चीज़ है जिसको रोका नहीं जाता। समय की गति तो बिल्कुल आबाद रूप से निरंतर चल ही रही है, उसको रोकने की बात नहीं है। क्योंकि जिस व्यक्ति को ज्ञान दिया जा रहा है उसको ऐसा फील हो सकता है कि चार घंटे ज्ञान दिया तो ऐसा लगेगा कि जैसे आधा घंटा ही दिया गया हो। उसको समय की अविद्या हो सकती है। इसको समय की अविद्या कहते हैं। लेकिन हम देखें समय के दोनों ओर सेनायें खड़ी हैं और दुर्योधन युद्ध के लिए आतुर है तो चार-पांच घंटे में गीता ज्ञान दिया जाना, उनके मन तो शांत नहीं थे ना! उधर पांडवों में भी भीम जैसे जो बिल्कुल उत्तेजित थे क्या कर रहा है अर्जुन बीच में खड़ा हुआ? ज़रूर वो सोच रहे होंगे ना। तो उनके मन तो उत्तेजित थे ना, उनके मन शांत नहीं थे। इसलिए उनके लिए तो एक-एक क्षण लम्बा होता जा रहा था। तो एक तो इस बात पर विचार करना है।

दूसरी बात, मुझे ऐसा लगता है कि संदर्भ जोड़ा गया है गीता ज्ञान को आगे बढ़ाने के लिए, जैसे कोई पिक्चर की कहानी लिखी जाती है, लिंक सहित लिखी जाती है। अर्जुन को मोह हो गया। सोचने की बात है, जिसने लम्बे काल से युद्ध की तैयारी की हो, जो अपने राज्य को लेने के लिए युद्ध कर रहे हों, जिनको कोरवों ने बड़ा कष्ट दिया हो, भले ही उसमें भीष्म, द्रौणाचार्य उनके अपने हैं लेकिन वो भी उनको कष्ट देने में शामिल थे। द्रौणाचार्य ने भी तो कभी आवाज़ नहीं उठाई ना! भीष्म ने भी तो कभी आवाज़ नहीं उठाई थी ना कौरवों के विरुद्ध कि तुम सब ये अन्याय कर रहे हो। उनके प्रति मोह हो गया, चलो उनके प्रति मोह हो भी जाये उनको छोड़ के और सब हैं ना जिनसे युद्ध किया जाये। तो इसमें मोह की बात नहीं। और एक सैनिक जो सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर हो, युद्ध सामने हो उसको मोह हो ही नहीं सकता। उनको तो सब याद आ रहा था कि द्रौपदी का चिर हरण किया गया था। हमें वनवास दिया गया था। हमारा इन्द्रप्रस्थ छीन लिया गया था, हमें अपमानित किया गया था। वो सब उन्हें याद आ रहा था। उनका तो खून खौल रहा था। मोह की वहाँ बात ही नहीं थी। इसलिए मुझे ऐसा लगता है कि ये प्रसंग जोड़ा गया है। अगर केवल मोह को संतुष्ट करने के लिए ज्ञान दिया होता तो दूसरा अध्याय ही प्रयाप्त था। तुम आत्मा हो, ये सब आत्मायें हैं। न ये कभी मरते, न तुम किसी को मार रहे हो। दूसरे अध्याय के बाद वो ज्ञान समाप्त हो जाता। लेकिन योग की, सन्यास की, कर्म की, निष्काम कर्म की, कल्प वृक्ष की, सृष्टि चक्र की, सुव्याख्या की वहाँ ज़रूरत नहीं थी। इसलिए जो हमारे दर्शक, चिंतक हैं वो अच्छी तरह विचार करें कि गीता ज्ञान इस तरह नहीं दिया जा सकता कि दिन में चार घंटे दिया और पूर्ण हो गया। गीता ज्ञान एक लम्बे समय तक स्वयं परमात्मा ने दिया। और केवल ज्ञान देकर छोड़ नहीं दिया, ज्ञान की एक-एक बात जीवन में धारण हो इसका पुरूषार्थ कराया, योग-साधनायें कराई। ताकि आत्मायें पावन बन जायें। तो भगवान ने स्वयं आकर कहा न युद्ध के मैदान में, न द्वापर के अंत में बल्कि कल्प के अंत में जब सृष्टि तमोप्रधान हो गई थी तो मैंने स्वयं आकर ये गीता ज्ञान दिया था। और गीता ज्ञान देकर, तुम सभी को राजयोग सीखा कर, पतित से पावन बनाया था। मनुष्य से देवता बनाया था और ये युग परिवर्तन हुआ था। इसमें बहुत सारी बातें हैं विस्तार की तो अभी हम उसपर नहीं जायेंगे। पर ये सत्य बात परमात्मा ने सिखाई।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड' और 'अवेकनिंग' चैनल

मुम्बई-घाटकोपर। माननीय उप मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस को रक्षासूत्र बांधते हुए राजयोगिनी ब्र.कु. शकु दीदी,अतिरिक्त निर्देशिका,ब्रह्माकुमारीज़ योग भवन।

सूरत-अडाजन(गुज.)। सी.आर. पाटिल,जल मंत्रालय केंद्र सरकार एवं गुजरात भाजपा प्रदेश प्रमुख को राखी बांधने के पश्चात् प्रसाद व ब्लेसिंग कार्ड देते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. दक्षा बहन।

रायपुर-छ.ग.। लोकसभा सांसद,जिन्दल स्टील एण्ड पॉवर लिमिटेड के मालिक और ओ.पी. जिन्दल ग्लोबल यूनिवर्सिटी के चान्सलर नवीन जिन्दल को उनके रायपुर आगमन पर ईश्वरीय रक्षासूत्र बांधते हुए ब्रह्माकुमारीज़ रायपुर संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी। साथ हैं ब्र.कु. रश्मि बहन और ब्र.कु. दीक्षा बहन।

धामनोद-म.प्र.। केंद्रीय राज्य मंत्री महिला एवं बाल विकास विभाग सावित्री ठाकुर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रीति बहन।

सूरत-गुज.। बटुकगिरि बापू,अटल आश्रम को रक्षासूत्र बांधते हुए अडाजन सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. दक्षा बहन।

कंधार-नांदेड़(महा.)। शिवपुराण कथा वाचक पंडित श्री प्रदीप मिश्रा जी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति बहन।

पन्ना-म.प्र.। एस.पी. सांई कृष्ण एस थोटा को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सीता बहन।

भाटापारा-छ.ग.। एसडीएम नितिन तिवारी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मंजू बहन।

अकलतरा-छ.ग.। बालौदा थाना में थाना प्रभारी अशोक वैष्णव को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. भुवनेश्वरी बहन।

रतलाम-डोंगरे नगर(म.प्र.)। पुलिस अधीक्षक राहुल लोढ़ा को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. सविता दीदी।

भुज-कच्छ आइयानगर(गुज.)। डिप्टी कलेक्टर मितेश भाई पंड्या को राखी बांधते हुए ब्र.कु. रीना बहन।

कसरावद-खरगोन(म.प्र.)। कसरावद उपजेल के जेलर धर्मवीर जी को राखी बांधते हुए ब्र.कु. भावना बहन।

धड़गांव-महा.। औषध निर्माण अधिकारी रामदास पावरा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरिता बहन।

राजगढ़-ब्यावरा(म.प्र.)। कलेक्टर गिरीश कुमार मिश्रा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मधु दीदी।

नखत्राणा-कच्छ(गुज.)। लोहाना समाज के प्रमुख राजूभाई पलण को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. किरण बहन।

जावरा-म.प्र.। एसडीएम त्रिलोक गौड़ को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सावित्री बहन।

बारडोली-गुज.। व्यसन मुक्ति केंद्र के संचालक किरण भाई को राखी बांधते हुए ब्र.कु. जयश्री बहन।

व्यारा-गुज.। जिला विकास अधिकारी वी.एन. शाह को राखी बांधते हुए स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. दीपा बहन।

हिंगनघाट-महा.। जीआईएमएटेक्स उद्योग समूह की निदेशक लतादेवी मोहोता को राखी बांधते हुए ब्र.कु. जयमाला बहन।

जिंतूर-महा.। विधायक मेघना बोर्डीकर को राखी बांधते हुए ब्र.कु. नंदा बहन।

अध्यात्म और आयुर्वेद के समन्वय से होगा रोग का निदानः आचार्य

- मेडिकल विंग के 49वें माइंड-बॉडी-मेडिसिन राष्ट्रीय सम्मेलन का सफल आयोजन
- पतंजलि आयुर्वेद के एमडी व सीईओ आचार्य बालकृष्ण ने किया शुभारंभ
- देशभर से एक हज़ार से अधिक आयुर्वेद के डॉक्टर, वैद्य और शोधार्थी ने लिया भाग

शांतिवन। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के मुख्यालय शांतिवन के आनंद सरोवर परिसर में मेडिकल विंग के 49वें 'माइंड-बॉडी-मेडिसिन' त्रिदिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन हुआ।

शुभारंभ पर हरिद्वार से आए पतंजलि आयुर्वेद के एमडी व सीईओ आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि जब एक रोगी हमारे पास आता है तो वह हमें भगवान के भाव से देखता है लेकिन यदि हमारे मन में लूट और पैसे कमाने का भाव होगा तो इससे बड़ा पाप कोई नहीं है। शास्त्र के अनुसार चिकित्सक सही मायने में एक योगी और साधक होता है। आयुर्वेद में नाड़ी वैद्य की बड़ी महिमा है। लेकिन चिकित्सा नाड़ी विज्ञान सीखने के लिए पहले अपने मन का शांत और शक्तिशाली होना ज़रूरी है। ज्यों-ज्यों हम दुनिया की नॉलेज को लेते जा रहे हैं, अपने नॉलेज से विमुख होते जा रहे हैं, उस विमुखता को समाप्त करने का नाम 'आध्यात्मिकता' है। यह एक यात्रा है जो ब्रह्माकुमारीज़ के मार्ग पर चलने से पूरी हो सकती है। आत्म-ज्ञान को देने वाला एक परमात्मा ही है। ब्रह्माकुमारीज़ में मनुष्य को सात्विक बनाने का प्रयास किया जाता है। यहां मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला।

राजयोग मेडिटेशन से मन व शरीर दोनों होता है ठीक

नई दिल्ली से आए आयुष मंत्रालय के सलाहकार डॉ. कौस्तुभ उपाध्याय ने कहा कि ब्रह्माकुमारीज़ में राजयोग मेडिटेशन की शिक्षा दी जाती है, इससे न केवल मन ठीक होता है बल्कि शरीर भी स्वस्थ रहता है। आयुर्वेद कहता है कि जो आपको आवश्यकता है उतना लो बाकी का निषेध करो। ज़रूरत से ज़्यादा का संग्रह करने से बीमारियां जन्म लेती हैं।

परमात्मा करते हैं आत्मा के सभी रोगों का इलाज

ब्रह्माकुमारीज़ के अतिरिक्त महासचिव ब्र.कु. बृजमोहन भाई ने कहा कि जब आत्मा में अनेक विकृतियां पैदा हो जाती हैं, आत्मा बीमार हो जाती है तो परमपिता शिव परमात्मा आकर आत्मा के सभी रोगों का इलाज करते हैं। परमात्मा कहते हैं कि खुद को आत्मा समझना ही सभी रोगों का इलाज है। मन को मेरे में लगाओ तो आत्मा में आत्मबल, शक्तियां आएंगी और शक्तिशाली बन जाएंगे।

आज विश्वभर के देश कर रहे हैं भारत का योग

जोधपुर के डीएसआरआरए यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. पी.के. प्रजापति ने कहा कि अध्यात्म हमारी धरोहर है। सबकी निगाहें भारत की ओर है। आज हमारे योग को विश्वभर के देश कर रहे हैं। निश्चित रूप से एक दिन भारत अध्यात्म के बल से विश्वगुरु बनेगा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान कई क्षेत्रों में सराहनीय कार्य कर रहा है। आयुर्वेद और योग एक-दूसरे के पूरक हैं। संस्था के कार्यकारी सचिव राजयोगी ब्र.कु. डॉ. मृत्युंजय, विंग के उपाध्यक्ष डॉ. प्रताप मिड्ढा और सचिव डॉ. बनारसी लाल शाह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। दिल्ली की वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. कमला दीदी ने मंच संचालन किया। मधुरवाणी ग्रुप के कलाकारों ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

यहां भोजन की पवित्रता पर दिया जाता है ध्यान - आचार्य बालकृष्ण

जो ब्रह्माकुमार भाई-बहनें संयमित दिनचर्या और ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं वही यहां भोजन पकाते हैं। इसलिए इस भोजन को ग्रहण करने से सभी का मन भी शुद्ध होता है। साथ ही यहां जो दान आता है उसकी पवित्रता का भी ध्यान रखा जाता है। लोग उपवास में रहते हैं तो कहते हैं कि अन्न नहीं खाना है। लेकिन शास्त्र के अनुसार जो खाया जाए वह अन्न है। हमने अपनी सुविधानुसार व्रत में खाने-पीने की चीज़ों को जोड़ लिया है। उपवास पेट खाली रखने के लिए होता है। यदि हमारा मन और शरीर स्वस्थ हो जाए तो यही वैकुंठ से कम नहीं है।

अपने शरीर का ध्यान नहीं रखना भी एक अपराध है : डॉ. कौशिक

नई दिल्ली के सीसीआरएच के महानिदेशक डॉ. सुभाष कौशिक ने कहा कि यदि हम अपने शरीर का ध्यान नहीं रख रहे हैं तो अपने साथ अपराध कर रहे हैं। एक स्वस्थ इंसान को बनाने में 25 फीसदी योगदान स्वस्थ शरीर, 25 फीसदी स्वस्थ मन, 25 फीसदी अध्यात्म और 25 फीसदी हमारी भावनाओं का होता है। इन सभी के संतुलन से ही हम सम्पूर्ण स्वस्थ माने जाते हैं।

ब्रह्माकुमारीज़ मुलुंड सब-ज़ोन द्वारा शिक्षा रत्न सम्मान समारोह

देश के उज्जवल भविष्य की नींव रखें शिक्षक : गोदावरी दीदी

मुम्बई-मुलुंड। ब्रह्माकुमारीज़ के मुलुंड सब-ज़ोन द्वारा चंदनबाग स्कूल के मैदान में आयोजित 'शिक्षा रत्न सम्मान पुरस्कार एवं सम्मान पत्र वितरण समारोह' में 25 से अधिक प्रधानाचार्य और 125 से अधिक शिक्षकों ने भाग लिया। इस मौके पर राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. गोदावरी दीदी,संचालिका, मुलुंड सबज़ोन ने कहा कि शिक्षकों के पास यह अद्वितीय अवसर है कि वे बच्चों को सही दिशा में मार्गदर्शन दें, उन्हें मूल्य-आधारित शिक्षा प्रदान करें और इस प्रकार देश के उज्वल भविष्य की नींव रखें। राजयोगिनी डॉ. ब्र.कु. लजवंती बहन ने सभी का अभिनंदन करते हुए कहा कि आज के तेज़ी से बदलते समय में आध्यात्मिक विकास और आत्म-परिवर्तन की आवश्यकता है। डॉ. ब्र.कु. सरला बहन,संचालिका,लाइट हाउस,चेकनाका सेवाकेंद्र ने कहा कि गुरु वह है जो गौरव प्रदान करता है। टीचर माँ का दूसरा रूप होता है। डॉ. अनाया थाटे,सहायक प्रोफेसर,मुंबई विश्वविद्यालय,संगीत विभाग ने बताया कि कैसे संगीत ने उन्हें इस संस्थान और भगवान के करीब लाया और उनके काम को और अधिक निष्ठापूर्वक करने के लिए प्रेरित किया। जन-गण-मन स्कूल के प्रधानाचार्य और जानवी मल्टी फाउंडेशन के चेयरमैन डॉ. राजकुमार कोल्हे ने शिक्षकों की प्रशंसा करते हुए कहा कि कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में छात्रों को महापुरुषों के नाम से प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे वे उनके गुणों को अपने जीवन में उतार सकें। संजय दीना पाटिल,सांसद ने शिक्षकों के सम्मान को सराहा और ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान के कार्यों में हर संभव सहयोग देने का आश्वासन दिया। ब्र.कु. हर्षा बहन ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए शिक्षकों कहा कि ध्यान और एकाग्रता के अभ्यास से शिक्षक अपने छात्रों को बेहतर ढंग से समझकर उनका मार्गदर्शन करेंगे और अपने जीवन में शांति और स्थिरता ला पाएंगे। कार्यक्रम में 200 से अधिक लोग उपस्थित रहे।

नशा मुक्त भारत अभियान के तहत नगर निगम में आयोजन

ग्वालियर-म.प्र.। भारत सरकार के सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत देश के 78वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर एनएमबीए एप्प के पूर्ण होने जा रहे पाँच वर्ष के उपलक्ष्य में इस वर्ष नशे के विरूद्ध एनएमबीए (नशामुक्त भारत अभियान) उत्सव "विकसित भारत का मंत्र, भारत हो नशे से स्वतंत्र" थीम पर देशव्यापी जन जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन ब्रह्माकुमारीज़ सहित अन्य संस्थानों के सहयोग से नगर निगम के बाल भवन सभागार में किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से महामंडलेश्वर श्री संतोष आंनद जी महाराज, विनोद शर्मा,जिला महामंत्री बीजेपी, राजयोगिनी ब्र.कु. आदर्श दीदी,स्थानीय ब्रह्माकुमारीज़ सेवाकेंद्र संचालिका, अंनगपाल सिंह भदौरिया,संभाग प्रमुख गायत्री परिवार, हरिओम गौतम,अध्यक्ष रमन शिक्षा समिति, श्रीमति कृति त्रिपाठी,जॉइंट डायरेक्टर सोशल जस्टिस वेलफेयर विभाग, रामसेवक श्रीवास्तव,अहिंसा नशा मुक्ति केंद्र, दीपक जी, पूर्वी अग्रवाल,समग्र अधिकारी नगर निगम, ब्र.कु. प्रहलाद,स्थानीय ब्रह्माकुमारीज सेवाकेंद्र, सौरभ गर्ग,समग्र अधिकारी, पूनम जी, गिर्राज जी आदि शामिल रहे अपने विचार सभी के समक्ष रखे।

ब्रह्माकुमारी बहनें एक आध्यात्मिक शिक्षक के रूप में समाज को मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ा रही हैं : एसडीएम

कादमा-हरियाणा। शिक्षक वास्तव में उस दीपक की तरह है जो स्वयं जलकर दूसरों को प्रकाशित करता है। हमें बच्चों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यवहारिक ज्ञान भी देना चाहिए। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ एवं ग्राम पंचायत रामबास के संयुक्त तत्वावधान में शिक्षक दिवस पर राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय रामबास में 'शिक्षक समृद्ध एवं सशक्त समाज के मार्गदर्शक' विषय पर आयोजित 'शिक्षक सम्मान समारोह' में एसडीएम सुरेश दलाल,बाढडा ने व्यक्त किए। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज़ के सामाजिक कार्यों व शिक्षाविदों के सम्मान के लिए प्रशंसा करते हुए कहा कि ब्रह्माकुमारी बहनें एक आध्यात्मिक शिक्षक के रूप में समाज को मानवीय मूल्यों का पाठ पढ़ा रही हैं। ब्रह्माकुमारीज़ की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. वसुधा बहन ने कहा कि जब शिक्षक बच्चों में श्रेष्ठ संस्कार, नैतिक व मानवीय मूल्य भरें, तभी हम एक अच्छे राष्ट्र का निर्माण कर सकते हैं। इस मौके पर स्टेट अवॉर्डी शिक्षा विभाग राज्य शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित हरपाल आर्य, सरपंच सुधीर शर्मा, प्राचार्य यशपाल यादव, ब्र.कु. ज्योति बहन व ब्र.कु. नीलम बहन ने भी अपने विचार रखे। मंच संचालन प्रवक्ता ललित भारद्वाज ने किया। इस मौके पर ब्र.कु. सुनील भाई व विद्यालय के सभी शिक्षक व स्टाफ मौजूद रहे।

रामबास कलस्टर के 23 अध्यापकों व शिक्षकों को विशेष योगदान हेतु किया गया सम्मानित

RNI NO RAJHIN/2000/00721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/24-26, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2024-26, Posting on 12th TO 14th and 22nd TO 24th each month, published on 12th Sep, 2024
स्वामी - आर.ई.आर.एफ, प्रकाशक, सम्पादक एवं मुद्रक- गंगाधर नरसिंघानी द्वारा कैपिटल ऑफसेट, L 801-I, Sector-28, GIDC Gandhinagar(Guj.) से मुद्रित एवं ओमशान्ति मीडिया, ब्रह्माकुमारीज़,शांतिवन-राज. से प्रकाशित।
कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया
ब्रह्माकुमारीज़, शांतिवन,- 307510
See Latest News
www.omshantimedia.org